Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

गलियार गधो घोड़ो मोल ले,
खाडेती घणो दुख पावे।
ज्यूं अविनीत ने दिख्यां दीयां पछें,
पग-पग गुर पिछतावे।।

दुष्ट प्रकृति वाले गधे या घोड़े को खरीद कर वाहक दु:खी बन जाता है। उसी प्रकार अविनीत को दीक्षित कर गुरु पग-पग पर पछताते हैं।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 08 • 25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 23-11-2024 • पेज 20 • ₹ 10 रुपये

स्वर्णाक्षरों में कर अंकित सूरत का प्रवास,
फैला कर अध्यात्म की हर दिशा में सुवास।
बढ़ चले ले कारवां ज्योतिचरण साक्षात्,
पूरी करने कच्छ-भुज-सौराष्ट्र की हर आस ।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

रमणीय बने हैं और रमणीय बनकर ही रहें : आचार्यश्री महाश्रमण

संयम विहार में संयम सुमेरु के सन् 2024 के चतुर्मास का अंतिम प्रवचन

सूरत।
15 नवम्बर, 2024

महान यायावर आचार्यश्री महाश्रमण जी के सन् 2024 के सूरत चतुर्मास का अन्तिम दिवसीय प्रवास और समग्र सूरत वासियों द्वारा मंगलभावना अभिव्यक्ति का प्रसंग। महातपस्वी परम पूज्यवर ने जनमेदिनी को पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया- हमारी दुनिया में दो तत्व हैं। एक है आत्मा यानि जीव और दूसरा तत्व है अजीव। पच्चीस बोल में 21वां बोल है- राशि दो - जीव राशि, अजीव राशि। यह सबसे छोटा बोल है, परन्तु इस छोटे से बोल में सारी दुनिया समाविष्ट हो गई कि जीव और अजीव के सिवाय हमारी दुनिया कुछ भी नहीं है।

हमारे जीवन में भी दो तत्वों का योग है- जीव और अजीव या आत्मा और शरीर। एक सिद्धान्त यह रहा है- कि जीव अलग है, शरीर अलग है। दोनों का अस्तित्व अलग है, इसे भेद विज्ञान का सिद्धान्त माना जा सकता है। दूसरा सिद्धान्त यह रहा कि जीव और शरीर अलग नहीं एक ही है। दोनों मान्यताएं एक दूसरे से विरूद्ध है।

अन्य जीव अन्य शरीर वाद आस्तिकवाद की मान्यता है तो तद्-जीव-तद् शरीरवाद नास्तिकवाद की मान्यता है। हमारी धरती पर आस्तिकवाद की धारा है तो कोई नास्तिक विचारधारा वाला भी मिल सकता है। नास्तिकवाद भी एक दर्शन है। छः दर्शनों में यह चार्वाकवाद का नास्तिक दर्शन है।

अध्यात्म की धारा का सारा तंत्र आस्तिकवाद के आधार पर मुख्यतया टिका हुआ है। नास्तिकवाद भौतिकता पर टिका हुआ है। जहां आत्मा को शाश्वत माना गया है वहां अध्यात्म है। जहां आत्मा नाम की चीज ही नहीं वहां अध्यात्म की कोई उपयोगिता नहीं है।

आज कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा इस चतुर्मास का अन्तिम दिन है। पूज्य प्रवर ने कुमार श्रमण केशी और राजा प्रदेशी के घटनाक्रम को समझाते हुए फरमाया कि कुमार श्रमण केशी ने राजा प्रदेशी को नास्तिक से आस्तिक बना दिया। राजा व्रत स्वीकार कर रमणीय बन गया। आत्मा अलग और शरीर अलग इस सिद्धान्त को राजा प्रदेशी ने समझ लिया था। आप लोग मुझे कुमार श्रमण केशी की परंपरा से मान लें और आप लोगों को राजा प्रदेशी की तरह मान लेते हैं तो सूरत के लोगों ने जो भी त्याग, नियम, व्रत लिए हैं, उनमें दृढ़ रहें। हमारे जाते ही उन नियमों को तोड़ नहीं दें। रमणीय बने हैं और रमणीय बनकर ही रहें। आपके जीवन में धर्म बना रहे। मेरा संदेश है कि मैं भी रमणीय बना रहूं और आप लोग गृहस्थ जीवन में नियमों के अनुसार रमणीय बने रहना। आपके चित्त में खूब समाधि रहे। जितनी धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा बन सके उसका लक्ष्य रहे। सूरत में खूब धार्मिक भावना बनी रहे। आज हमारा ये विदाई का, मंगल भावना का, इस बार के चतुर्मास का अन्तिम प्रवचन है। सभी से मेरी खमत-खामणा है। आप लोग आध्यात्मिक सुख में रहते हुए धर्म ध्यान करते रहें।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित भगवई भाष्य खंड आठ पूज्यवर को समर्पित कर लोकार्पित किया गया। मुनि अभिजीत कुमार जी ने भगवई भाष्य खंड आठ के विषय में अभिव्यक्ति दी।

पूज्यवर के प्रति अनेक लोगों ने मंगल भावनाएं अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मैत्री, प्रमोद, करुणा व मध्यस्थ भावना का हो अनुचिंतन : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
16 नवम्बर, 2024

सूरत का ऐतिहासिक चतुर्मास सकुशल सम्पन्न कर भैक्षव शासन के महासूर्य तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में संयम विहार से मंगल विहार कर सूरत के पांडेसरा क्षेत्र में पधारे।

पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए महामनीषी ने फरमाया कि मिगसर कृष्णा एकम को विहार करना है तो कोई मुहुर्त देखने की आवश्यकता नहीं है। आज का दिन जैन साधु-साध्वियों के लिए वरदान स्वरूप है। चतुर्मास का अपना महत्व है और शेषकाल का अपना महत्व है।

जीवन में धर्म का होना बड़ी बात है। यह मानव जीवन प्राप्त होना बड़ी दुर्लभ बात है। यह वर्तमान में हमें उपलब्ध है। इस जीवन में जितना धर्म का अर्जन हो सके कर लेना चाहिए। प्राणियों के प्रति मैत्री भाव रखें। सबको अपनी आत्मा के समान समझें। यह चिंतन रहे कि 'मुझे सुख प्रिय है तो दूसरों को भी सुख प्रिय है।' किसी को दुःख न देवें। सबके साथ सद्भावनामय व्यवहार रहे।

जो गुणीजन हैं, उनके प्रति प्रमोद भावना रहे। गुणों की पूजा की गई है। दूसरों को दुःखी देखकर हम खुशियां न मनाएं और दूसरे सुखी है उन्हें देखकर हम दुःखी न बने। जो संक्लिष्ट हैं उनके प्रति करूणा की भावना रहे। विपरीत वृत्ति वाले व्यक्ति के प्रति भी मध्यस्थ भाव रहे। ये चार भावनाएं (मैत्री, प्रमोद, करुणा व मध्यस्थ भावना)-अनुप्रेक्षाएं हैं। ये बारह भावनाओं से अलग भावनाएं हैं, जो हमारे व्यवहार से जुड़ी है। इन भावनाओं का अनुचिन्तन होता रहे।

चार माह तक भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में ही रहने का काम पड़ा। सीमित क्षेत्र में रहने का बन्धन आज टूट गया और मानो उससे मुक्ति मिल गई। कहीं बन्धन का महत्व है तो कहीं मुक्ति का भी महत्व है। मिगसर कृष्णा एकम मुक्ति दिवस होता है और आज पहला प्रवास पांडेसरा के तेरापंथ भवन में करने का मौका मिला है। सबमें धार्मिक भावना बनी रहे। सब में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की भावना बनी रहे। पूज्यवर की अभिवन्दना में मुकेश बाबेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। वर्धमान स्थानवासी संघ से जगदीश डांगी ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

साधन की अपेक्षा साध्य का मूल्य है अधिक : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
17 नवम्बर, 2024

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ पांडेसरा से विहार कर भेस्तान पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए शान्तिदूत ने फरमाया कि मनुष्य जन्म मिलना एक महत्वपूर्ण बात मानी जा सकती है। 84 लाख जीव योनियां बताई गई हैं, उनमें यह मनुष्य जन्म मिलना विशेष बात हो सकती है।

मनुष्य जन्म मिलना एक उपलब्धि है। अब विचारणीय बात यह होती है कि इस मनुष्य जन्म का कैसे धार्मिक रूप से जीवन यापन किया जाये। इसके लिए आदमी ईमानदारी के मार्ग पर चलने का प्रयास करे। ईमानदारी और बेईमानी दो मार्ग है। ईमानदारी के मार्ग पर चलने से परेशानी, संघर्ष व कठिनाई आ सकती है परन्तु मंजिल बहुत बढ़िया है।

मार्ग का अपना मूल्य है तो मंजिल का तो बहुत मूल्य है। एक साधन है, दूसरा साध्य है। साधन की अपेक्षा साध्य का अधिक मूल्य है। अध्यात्म के क्षेत्र में मोक्ष को साध्य बनाया जा सकता है। उस साध्य को सिद्ध करने के लिए पवित्र साधन चाहिए। अशुद्ध साधन से मोक्ष रूपी शुद्ध साध्य की प्राप्ति कैसे हो सकेगी? मोक्ष का शुद्ध साधन है- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र और सम्यक् तप।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप यह मार्ग जिनेश्वरों ने बताया है। ईमानदारी भी एक शुद्ध तत्व है। ईमानदारी परेशान हो सकती है परन्तु परास्त नहीं हो सकती। बेईमानी एक बार तात्कालिक रूप में फल देने वाली भी हो जाए पर वह अपवित्र साधन है उसका खराब परिणाम आने की संभावना है। झूठ, कपट चोरी करना यह बेईमानी है। सच्चाई, सरलता, चोरी नहीं करने का संकल्प ईमानदारी है।

दो शब्द हैं- चित्त और वृत्त। चरित्र की संयम पूर्वक रक्षा करें। लक्ष्मी, जीवन और जवानी चंचल है, एक धर्म ही निश्चल है। ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। साधुओं के उपदेश से प्रेरणा मिल सकती है, उपकार हो सकता है।

एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी से पुनि आध।

तुलसी संगत साध की, हरै कोटि अपराध।।

जो साधु परोपकार के लिए है, ऐसे साधु की सन्निधि कल्याण कारी होती है।

सुत, दारा, अरू लक्ष्मी पापी के भी होय।

संत समागम हरी कथा, तुलसी दुर्लभ दोय।।

संतो की संगत से व्यक्ति अपनी बुराइयों को छोड़ सकते हैं। साधु तो अपरिग्रही होते हैं, उन्हें न नोट चाहिए, न वोट चाहिए, न प्लोट चाहिए, वे तो गृहस्थों की खोट दूर करने वाले होते हैं। व्यक्ति का जीवन अच्छा बनाने वाले संत होते हैं। यहां पर भी खूब धार्मिक जागरणा चलती रहे।

पूज्यवर ने 10 नवम्बर को दीक्षित मुनि चन्द्रप्रभकुमारजी को बड़ी दीक्षा प्रदान करवाई। पूज्यवर के स्वागत में अशोक गोखरू, सिमोनी मेहता, विश्वा पितलिया, उधना सभा अध्यक्ष निर्मल चपलोत, नीलम मेहता आदि ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी के जीवन प्रसंगों पर ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। इन्दौर का श्रावक समाज कृतज्ञता ज्ञापन करने हेतु श्री चरणों में पहुंचा। इन्दौर सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। निलेश रांका ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी एवं मुनि कीर्तिकुमार जी ने किया।

आरोग्य हेतु करें आध्यात्मिक लक्ष्मी की आराधना

रायपुर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकर जी ने रायपुर स्थित जय समवशरण में दीपावली पर विशेष सेमिनार को संबोधित करते हुए कहा दीपावली का पर्व महत्वपूर्ण है। यह कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी से प्रारंभ होकर अमावस को संपन्न होता है। कुछ पर्व साधना के लिए बहुत उपयुक्त होते हैं, जिसमें दीपावली भी विशेष है। कुछ लोग दीपावली के अवसर पर 3 दिन का उपवास करते हैं। तप अनुष्ठान के साथ-साथ जप अनुष्ठान भी करते हैं। जप का अपना महत्व है। जप के द्वारा हम अपने लक्ष्य की दिशा में बहुत आगे बढ़ सकते हैं। दीपावली को लक्ष्मी का पर्व माना जाता है। इस दिन लोग लक्ष्मी की आराधना करते हैं। किंतु यह केवल लक्ष्मी पूजन का ही नहीं एक आध्यात्मिक पर्व भी है। यह पर्व लक्ष्मी से जुड़ा हुआ है, राम के अयोध्या आगमन से जुड़ा हुआ है, जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण से भी जुड़ा हुआ है। मुनिश्री ने आगे कहा आंतरिक गुणों का विकास भी एक प्रकार की अमूल्य संपदा है जिस व्यक्ति के पास भीतर का प्रकाश नहीं होता है उसके आंतरिक गुणों का विकास नहीं होता है। उसमें आत्म बल नहीं होता है, व्यक्ति धनी होकर भी दरिद्र बना रहता है। जिसके आंतरिक गुणों का विकास होता है वह अत्यंत साधारण स्थिति में भी दुनिया का महापुरुष बन जाता है। हम उस आध्यात्मिक लक्ष्मी की कामना करें। जिसकी प्राप्ति से जीवन धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से उत्कर्ष पर पहुंच जाए। मुनिश्री ने आगे कहा लक्ष्मी की कामना सबको रहती है। लक्ष्मी के बिना किसी का काम नहीं चलता है। किंतु लक्ष्मी का कोई एक रूप नहीं है, इसे केवल धन तंत्र ही नहीं माने ।मंत्र जाप में श्री का प्रमुख स्थान है, श्री बीज मंत्र लक्ष्मी का है। मुनिश्री ने विभिन्न लक्ष्मी रूपों की चर्चा करते हुए कहा आंतरिक गुणों का विकास, आरोग्य अंतर्दृष्टि समाधि निर्मलता तेजस्विता, गंभीरता यह भी लक्ष्मी के रूप हैं। दीपावली पर्व पर हमें इन गुणों की भी विशेष आराधना करनी चाहिए। जिससे लक्ष्मी का यह रूप भी प्राप्त हो सके। प्राप्तकर्ता विशिष्टतम व्यक्तित्व का धनी होता है, उसका जीवन सुख, शांति और आनंद का पर्यायवाची बन जाता है। मुनि नरेश कुमार जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

पीतमपुरा, दिल्ली।

'शासनश्री' मुनि विमलकुमार जी एवं साध्वी अणिमाश्रीजी का रोहिणी सेक्टर 3 में आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी पीतमपुरा से विहार कर जब रोहिणी पहुंची तो मुनित्रय ने मुख्य द्वारा तक आकर साध्वीश्री की अगवानी की। वात्सत्य एवं विनय के इस अद्भुत मिलन को देखकर श्रावक समाज भावविभोर हो गया।

'शासनश्री' मुनि विमलकुमारजी ने कहा - आज वर्षों के बाद साध्वी अणिमाश्रीजी मिलन हुआ है। साध्वी अणिमाश्रीजी हमारे धर्मसंघ की उदीयमान साध्वी, काम करने वाली साध्वी है। सुदूर प्रदेशों की यात्रा कर संघ की अत्यधिक प्रभावना की है। आपकी प्रवचन शैली की धर्मसंघ में अच्छी छाप है। आप जहां भी जाती हैं, अपने श्रम बूंदों से क्षेत्र को सरसब्ज बना देती है। दिल्ली में भी अपने बहुत अच्छा काम किया। अपनी सहवर्तिनी साध्वियों को भी अच्छा तैयार किया है। सारी साध्वियां एकमेक रहकर संघ की अच्छी प्रभावना कर रही है। आज का मिलन अध्यात्म की धाराओं का मिलन है।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज हम अपनी सिंवाची मालाणी की यात्रा से पूर्व आपश्री से आशीर्वाद लेने आए हैं। आप हमारे धर्मसंघ में संस्कृत व प्राकृत के प्रकांड विदान हैं। आपके ज्ञान की विशालता एवं चिंतन की गंभीरता प्रणम्य है। आपने लंबे काल तक गुरूकुलवास में रहकर गुरूओं से कृपा रत्नों को बटोरा है। आपश्री की ऋजुता, मृदुता व व्यवहार कुशलता मन को प्रफुल्लित करने वाली है। आपने सहवर्ती संतों को भी विकास के पथ पर गतिमान किया है। आपकी प्रेरणा मेरी यात्रा का पाथेय बनेगा।

रोहिणी के सभाध्यक्ष विजय जैन, जैन, पीतमपुरा सभाध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया, नरपत मालू, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष विमल बेंगानी ने भावों की प्रस्तुति दी।

मुनि मधुरकुमार जी, मुनि अक्षयकुमार जी, मुनि धन्यकुमारजी, साध्वी कर्णिकाश्री जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने गीत के द्वारा अपने भाव व्यक्त किए। मुनि धन्य कुमार जी ने भी सुमधुर स्वर लहरी प्रस्तुत की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार से अलंकृत डॉ. गोलेच्छा ने पाया भारत के सर्वश्रेष्ठ 10 वैज्ञानिकों में स्थान

अहमदाबाद।

आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार से अलंकृत एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वास्थ्य नीति विशेषज्ञ डॉ. महावीर गोलेच्छा को स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की ओर से जारी वैज्ञानिकों की सूची के शीर्ष दो प्रतिशत में शामिल किया गया है।

डॉ. गोलेच्छा ने चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में सम्पूर्ण भारत में सांतवी रैंक हासिल की है तथा विश्व के सर्वश्रेष्ठ दो प्रतिशत से भी कम वैज्ञानिको में सम्मिलित हैं। अमेरिका का स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय हर साल दुनिया भर के शीर्ष दो प्रतिशत शोधकर्ताओं के लिए उनके शोध प्रकाशनों के आधार पर डेटा जारी करता है। लगातार चौथे वर्ष डॉ. गोलेच्छा को इस वैश्विक सूची में स्थान मिला है।

डॉ. महावीर गोलेच्छा के स्वास्थ्य अनुसन्धान के क्षेत्र में 110 से भी अधिक अनुसंधान पत्र विश्व की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित किये गए। इन पत्रिकाओं में अनुसंधान पत्र प्रकाशित करने वाले वे सबसे युवा भारतीय हैं।

लगभग एक लाख शोधकर्ताओं को 22 वैज्ञानिक क्षेत्रों और 176 उप-क्षेत्रों में वर्गीकृत कर उनके अनुसंधान कार्यों एवं संबंधित क्षेत्रों में प्रगति में योगदान के आधार पर चयन प्रक्रिया पूर्ण की गई। ज्ञातव्य है कि डॉ. गोलेच्छा ने अल्ज़ाइमर एवं एपिलेप्सी जैसी जटिल मस्तिष्कीय बीमारियों के इलाज के लिए रिसर्च की एवं उनकी दवा को खोजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्तमान में डॉ. महावीर गोलेच्छा आइआइपीएसजी से सलग्न हैं, वे भारत सरकार के नीति आयोग, स्वास्थ्य मंत्रालय एवं विज्ञान मंत्रालय के महत्वपूर्ण प्रोजेक्टों में कार्य कर रहे हैं। डॉ. गोलेच्छा गुजरात सरकार एवं भारत सरकार के कॉमन रिव्यु मिशन टीम मेंबर भी है।

मंत्र ध्वनियों से ध्वनित हुआ आकाश मंडल

मण्डिया।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य ज्योति पुंज अलौकिक जप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी वृन्द द्वारा नवकार महामंत्र से हुआ।साध्वीश्री ने कहा - आगम ग्रंथों की चूलिकाओ में मंत्र व यंत्रों का प्रयोग मिलता है तथा अनेक जैन आचार्यों ने अपनी साधना काल के समय मंत्रों का प्रयोग किया, उन्हें सिद्ध किया तथा समय आने पर अपना प्रयोजन भी सिद्ध किया। तेरापंथ धर्म संघ के चतुर्थ आचार्य जयाचार्य ने पुष्य नक्षत्र में विघ्न उपस्थित होने पर अपने गुरु व इष्ट का स्मरण किया स्तवना व स्तुति के द्वारा उसका निवारण किया। श्रेष्ठ समय व श्रेष्ठ नक्षत्र में किया गया कार्य शुभ व अक्षय फलदायी होता है, वह हमारे मनोरथ को पूर्ण करने वाला होता है। इस अवसर पर बैंगलोर से समागत जैन संस्कारक जितेन्द्र घोषल, विक्रम दूगड, अरविंद बैद ने स्वर विज्ञान, मुद्रा योग तया यंत्र के साथ मंत्रों का प्राण ऊर्जा के साथ उच्चारण कर पूरे वातावरण को मंगल ध्वनियों से गुंजायमान बना दिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

श्रेष्ठ समय व श्रेष्ठ नक्षत्र में किया गया कार्य शुभ व अक्षय फलदायी होता है।

साध्वी मार्दव श्रीजी ने कहा - शांति की चाह रखने वाले को अपने चारों तरफ मंत्र व ध्वनियों से सशक्त शुभ आभामंडल का निर्माण करना होता है जिससे शुभ परमाणुओं को आकर्षित करने का सामर्थ्य बढ़ जाता है, जीवन मंगलमय बन जाता है। इस अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् मंड्या के तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम में महिला मंडल, कन्या मंडल व सभा की सक्रिय भूमिका रही। अनुष्ठान में लगभग 130 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। तेयुप मंड्या ने पधारे हुए संस्कारकों को सम्मानित किया।

गुरु पुष्य नक्षत्र का योग अनुष्ठान साधना के लिए सर्वोत्तम

रायपुर।

मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में अमृतसिद्धि योग व सर्वार्थसिद्धि योग के साथ ही गुरु पुष्य नक्षत्र का विशेष संयोग जो कई वर्षों में बनता है पर तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर के तत्वावधान में 'श्री पैंसठिया यंत्र एवं छंद अनुष्ठान' का आयोजन किया गया।

मुनिश्री ने बताया कि सभी धर्मों के शास्त्र कहते हैं कि ऐसे शुभ योग में की गई साधना शीघ्र फलित होती है। अनुष्ठान हेतु यंत्र व छंद आयोजन संस्था द्वारा उपलब्ध कराया गया। मुनिश्री ने एक-एक मंत्र का उच्चारण करते हुए, समझाते हुए यंत्र को सिद्ध करवाया।

अनुष्ठान में अच्छी संख्या में आराधकों ने सहभागिता दर्ज कराई। अनुष्ठान के सहयोगी राजेन्द्र, माया, डॉ. यश, महिमा सेठिया रायपुर रहे। अनुष्ठान में विशेष रूप से नरेश पोकरणा, पकंज बैद, निकुंज जैन, विवेक बैद, जय चोपड़ा, विकास बरलोटा की सहयोगात्मक सहभागिता रही। संचालन वीरेंद्र डागा, स्वागत व आभार रिशव जैन ने किया।

अनुष्ठान में छंद का उच्चारण ज्योति डागा, ललिता धाड़ीवाल, सरोज कोठारी, सुदर्शना डागा ने किया। हर्षद सेठ व हंसराज बैगानी का विशेष सहयोग रहा।

'दिवाली के रंग, रंगोली के संग' प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशन में एवं तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के तत्वावधान में तेरापंथ भवन ,सिकंदराबाद में 'दिवाली के रंग, रंगोली के संग' प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र से 'प्रकाश पर्व' कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम की संयोजिकाओं द्वारा 'मिच्छामी दुक्कडम' गीत से मंगलाचरण, अध्यक्ष कविता आच्छा द्वारा पधारे हुए श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत एवं दीपावली की शुभकामनाएं प्रेषित की गई। साध्वी शिवमाला जी ने आत्मा का विमोचन व क्षमा के बारे में प्रेरणा देते हुए कहा कि हमें अध्यात्म, त्याग आदि का अपने जीवन में संवर्धन करना चाहिए। साध्वी अमितरेखा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी वृन्द द्वारा 'क्षमा दान देता हूं' गीत का सुंदर संगान किया गया। उपस्थित संभागियों को एक-एक दीपक प्रदान किया गया, जिसके प्रकाश के साक्ष्य में सभी ने अपने जीवन में हुए, किसी व्यक्ति द्वारा किए गए दुर्व्यवहार को अपने मन में क्षमा प्रदान कर, अपनी आत्मा को उज्जवल करने का प्रयास किया। मंत्री सुशीला मोदी ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पूजा गोलछा, द्वितीय स्थान अनीता गिरिया व सुमति धोका ने प्राप्त किया। कार्यक्रम की संयोजिकाएं अनीता गिडिया, रूबी दुगड, संतोष गुजरानी एवं पायल पारख का सहयोग रहा।

अध्यात्म साधना केंद्र में लोकार्पण समारोह

नई दिल्ली।

अध्यात्म साधना केंद्र, नई दिल्ली में अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के नवीनीकृत भाग 'आंगन' का भव्य लोकार्पण समारोह 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों सहित 200 से अधिक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। समारोह का संचालन जैन संस्कार विधि से संपन्न किया गया। समाजसेवी महेन्द्र नाहटा एवं शासन सेवी व अणुव्रत गौरव कन्हैयालाल जैन द्वारा लोकार्पण किया गया।

इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी ने उद्बोधन करते हुए कहा कि अध्यात्म साधना केंद्र ध्यान और साधना का प्रमुख स्थल है। यह प्राकृतिक चिकित्सा का भी एक महत्वपूर्ण केंद्र है। उन्होंने बताया कि केंद्र के वर्तमान भव्य स्वरूप के पीछे अनेक महानुभावों का अथक परिश्रम है। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के.सी. जैन ने सभी उपस्थित जनों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह केंद्र योग, प्रेक्षाध्यान, प्राकृतिक चिकित्सा और अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों का मुख्य केंद्र रहा है। 'आंगन' के नवीनीकरण के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने बताया कि यह केंद्र पहले की तुलना में अधिक समाजोपयोगी बन गया है।

उद्घाटनकर्ता, तेरापंथ महासभा के प्रधान न्यासी और समाजसेवी महेंद्र नाहटा ने कहा कि अध्यात्म साधना केंद्र आचार्य श्री तुलसी की अनमोल देन है। यह समाज का एक प्रमुख ध्यान केंद्र है, जिसकी प्रगति में समाज के वरिष्ठ श्रावकों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। पूर्व प्रबंध न्यासी के.एल. जैन ने केंद्र के विकास से जुड़ी अपनी यादें साझा करते हुए कहा कि अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण को बल मिला है। कार्यक्रम में जानकारी दी गई कि जनवरी माह में योगक्षेम भवन का लोकार्पण पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के द्वारा होगा।

अणुव्रत न्यास द्वारा तेजकरण सुराणा, जोधराज बैद और पन्नालाल बैद सहित कई महानुभावों का सम्मान किया। जोधराज बैद ने अध्यात्म साधना केंद्र के विकास के लिए अनुदान की घोषणा की। कार्यक्रम में अनेक संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी, तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, न्यासी डालमचंद बैद और अणुव्रत न्यास के प्रभारी न्यासी शांतिकुमार जैन समेत समाज के गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनीता जैन ने किया।

संक्षिप्त खबर

शब्द करते हैं हमारी सुंदर दुनिया का निर्माण

मंड्या। साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में दीपावली पर पैंसठिया अनुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा- हर इंसान शांति, सुख, समृद्धि, शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक प्रसन्नता चाहता है। उसकी प्राप्ति का अचूक मंत्र है- मंत्र साधना। मंत्र ध्वनियां व शब्द हमारे चारों तरफ शक्तिशाली आभावलय तथा मंत्र में निहित फल प्राप्ति के योग सिद्ध होने की स्थिति का निर्माण करते हैं। मंत्र मनोकामना पूर्ण होने में सहायक बनते हैं तथा उनसे पूरा वातावरण सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण बन जाता है। पैंसठिया यंत्र त्रस्त मानव को त्राण देता है। जो इसे अपने पास रखता है उसका अशुभ निवारण होता है। साध्वी मार्दवश्रीजी आदि साध्वी वृंद ने बीज मंत्रों के उच्चारण के साथ सुरक्षा कवच का निर्माण करवाते हुए लयबद्ध अनुष्ठान करवाया। लगभग 125 श्रद्धालुओं ने इस अनुष्ठान को तन्मयता के साथ पूर्ण किया।

हस्तकला का भव्य प्रदर्शन

मंड्या। साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में दो दिवसीय हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ नगर परिषद के अध्यक्ष नागेश एवं उपाध्यक्ष वरुणकुमार ने किया। नागेश एवं उनके साथियों ने तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वियों द्वारा निर्मित नारियल के पात्र, पेपरवेट से बनी आकर्षक वस्तुएं, पीपल के पत्तों पर की गई चित्रकारी, 50 वर्ष पुराने 3D फोटो एवं धागों से बनी माला, कसिदा, रंगाई, सिलाई आदि का अवलोकन किया। नागेश ने कहा- जैन संतों की कला वंदनीय है। यह प्रदर्शनी बहुत सुंदर एवं कलात्मक है। साध्वी संयमलताजी ने कहा- कला जीवन को उपयोगी एवं सार्थक बनाती है। कलात्मक व सुव्यवस्थित जीवन जीना ही वास्तविक जीवन जीना है। साध्वियों ने अपने जीवन में कला को जिया है। छोटी-छोटी एवं बारीक वस्तुओं का निर्माण उनके समर्पण, एवं पुरुषार्थ को दर्शाता है। गहरी एकाग्रता से निर्मित ये वस्तुएं हर व्यक्ति को प्रेरणा देती है कि पुरुषार्थ की लौ कभी मंद ना हो। साध्वियों ने सभी वस्तुओं की विवरण सहित जानकारी दी। मंडिया, मैसुरु एवं बेंगलुरु के श्रावक-श्राविकाओं ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने भी प्रदर्शनी में भाग लिया। दो दिन तक चली इस प्रदर्शनी में लगभग 200 व्यक्तियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

सुजानगढ़। तेरापंथ सभा भवन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भुतोडिया ने सबका स्वागत किया। साध्वी मुकुलयशा जी और साध्वी मनीषाश्रीजी ने तनाव मुक्त रहने के लिए प्रेक्षा ध्यान के प्रयोगों की जानकारी दी। संचालन महिला मंडल मंत्री डॉ. पूजा फुलफगर द्वारा किया गया।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर- श्रीरामपुरम के अंतर्गत कन्नड़ फ़िल्म स्टार पुनीत राजकुमार की तृतीय पुण्य तिथि के उपलक्ष में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का समायोजन किया गया। जिसमें कुल 16 जांच की गई। कुल 103 लोगों ने इस शिविर का लाभ लिया। इस अवसर पर तेयुप से अध्यक्ष कमलेश चोरड़िया, जयंतीलाल गांधी एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **भीलवाड़ा।** जितेन्द्र तलेसरा के हमीरगढ़ औद्योगिक परिसर में नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। संस्कारक अशोक सिंघवी व राकेश रांका ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम सानन्द संपादित करवाया।

■ **गंगाशहर।** भंवरी देवी-हुलास मल पुगलिया के पुत्र व पुत्रवधु विमल-तारा देवी पुगलिया के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक पवन छाजेड़, देवेन्द्र डागा और भरत गोलछा ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ **नोएडा।** बीकानेर निवासी नोएडा प्रवासी आरती-विपुल कोचर के नूतन गृह का गृह प्रवेश संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक भरत बेगवानी, महेंद्र कुमार श्यामसुखा, जितेंद्र लूणिया ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **राजराजेश्वरीनगर।** हिमांशु निखिल बोथरा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक दिनेश मरोठी, आलोक छाजेड़ ने विधि विधान से संपन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** संगीता-कन्हैया लाल नाहटा के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पवन छाजेड़, विनीत बोथरा और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **नालासोपारा।** विशाल चांदमल डांगी, वसई के लिंक रोड, नालासोपारा ईस्ट स्थित नूतन प्रतिष्ठान वर्ल्ड ऑफ वॉच का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से हुआ। इस कार्यक्रम में संस्कारक रमेश ढालावत, पारस बाफना, अरविंद धाकड़ ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

■ **राजसमन्द।** राजनगर निवासी अनिल मादरेचा की सुपुत्री सुरभि मादरेचा के नव प्रतिष्ठान नृत्यांजलि क्रिएशन कस्टमाइजड गिफ्ट शॉप का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। इस कार्यक्रम में कांकरोली से संस्कारक विनोद बडाला एवं सूरज रातडिया ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया गया।

■ **भीलवाड़ा।** अशोक बापना के अरिहंत मैचिंग पैलेस का मिनी मॉल स्थित नए परिसर में जैन संस्कार विधि से हुआ शुभारंभ। इस कार्यक्रम में भीलवाड़ा के संस्कारक अशोक सिंघवी व नवीन वागरेचा ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

■ **सूरत।** फरहाना शेख एवं स्नेहा पटेल के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कराक प्रकाश डाकलिया, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **राजाजीनगर, बैंगलोर।** मंजूनाथनगर स्थित सम्पत दक के नूतन प्रतिष्ठान 'रिद्धि सिद्धि आभरण' का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ संस्कारक राजेश देरासरिया एवं रणित कोठारी द्वारा विधि पूर्वक सम्पादित करवाया गया।

■ **बेंगलुरु।** गंगाशहर निवासी बेंगलुरु प्रवासी विपुल सेठिया पुत्र स्व. प्रकाशचंद सेठिया का नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ संस्कारक आदित्य मांडोत ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से सम्पन्न करवाया।

खुशियों की दीपावली-आत्मा का विमोचन कार्यशाला का आयोजन

चेंबूर।

अभातेममं के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल, चेंबूर द्वारा साध्वी राकेशकुमारी जी के सान्निध्य में दीपावली का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के माध्यम से हुआ। चेंबूर महिला मंडल ने प्रेरणा गीत द्वारा मंगलाचरण किया।

साध्वी मलयविभाजी, साध्वी विपुलयशाजी और साध्वी चेतस्वीप्रभाजी ने सामूहिक रूप से गीतिका का संगान किया। इस अवसर पर महिला मंडल द्वारा 'आत्मा का विमोचन' विषय पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। साध्वीश्री ने इस दीपावली पर सभी को किसी एक व्यक्ति को दिल से क्षमा करने का संकल्प लेने की प्रेरणा दी और इसे सम्यक दीपावली के रूप में मनाने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि दीपावली खुशियों का त्योहार है, इसे संयम और प्रसन्नता के साथ मनाना चाहिए। कार्यक्रम के अंतर्गत 'Declutter & Donation Drive' (वस्तुओं और मन दोनों को स्वच्छ करने की पहल) का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत महिला मंडल, चेंबूर ने अभिषेक शैक्षणिक सामाजिक संस्था, अंधेरी को घरेलू सामग्री, स्टेशनरी, खिलौने और अनाज जैसे उपयोगी सामान दान किए। इस अवसर पर संस्था की संस्थापक अध्यक्ष सुनीता सचिन नागरे, मुंबई जिला अध्यक्ष सूरज विश्वकर्मा और मुंबई युवा अध्यक्ष अभिषेक नागरे उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

सफल चातुर्मासिक प्रवास की सम्पन्नता पर आयोजित मंगल भावना समारोह

कोटा

गुलाबबाड़ी स्थित तेरापंथ भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी धनश्रीजी ठाणा 4 के सान्निध्य में सफलतम चातुर्मास की परिसम्पन्नता पर श्रावक समाज की ओर से मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। कोटा के श्रद्धालु श्रावक समाज ने भावविभोर होकर गद्-गद् स्वरों में साध्वीवृन्द को मंगल-भावना संप्रेषित की। साध्वी धनश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा- आज मैं सर्वप्रथम पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं, भावना का अर्ध्य समर्पित कर रही हूँ। आपश्री की कृपादृष्टि से हमारा कोटा प्रवास आनन्ददाई, सुखदाई एवं वरदाई रहा। कोटा का श्रावक समाज श्रद्धाशील, विनयशील एवं श्रमशील है। गण एवं गणपति के प्रति निष्ठावान है। हमारे प्रवास का अच्छा लाभ उठाया है। साध्वी श्री ने कहा- कोटा समाज का हर व्यक्ति अपने गुणों की सुवास से सबको सुवासित करता रहे। प्रेम व समता की कंघी लेकर घर-परिवार व समाज की समस्याओं को सुलझाता रहे। सुई बनकर हर टूटे रिश्तों को जोड़ता रहे। साध्वी श्री ने अनेक व्यक्तियों का नामोल्लेख करते हुए उनकी सेवाओं का अंकन किया।

साध्वी शीलयशाजी ने कहा कि सास और बहुओं का जितना स्नेह, सम्मान एवं समरसता पूर्वक व्यवहार हमने यहां देखा है ऐसा कहीं नहीं देखा। साध्वी सलिलयशाजी एवं साध्वी विदितप्रभाजी ने भी सभी के प्रति मंगल कामना व्यक्त करते हुए कहा कि श्रावक समाज माता-पिता तुल्य होता है। साध्वी वृंद ने श्रावक समाज से एवं श्रावक समाज ने साध्वी वृंद से क्षमा याचना की। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल की रुचि जैन एवं सरिता बरडिया ने मंगलाचरण से किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गजराज बोथरा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रवि बुच्चा, तेयुप अध्यक्ष सचिन जैन, तेरापंथ महिला मण्डल अध्यक्ष मंजू सुराणा एवं वर्तमान व पूर्व पदाधिकारियों ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा के पूर्व मंत्री धरमचंद जैन ने किया।

पीतमपुरा, दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के पीतमपुरा के सफलतम चातुर्मास की संपन्नता पर पीतमपुरा सभा द्वारा मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। शालीमार बाग, त्रिनगर, मानसरोवर गार्डन, मॉडल टाउन, कीर्तिनगर, शास्त्री नगर आदि संपूर्ण चोखले के भाई-बहनों ने साध्वी श्री को विदाई दी। पूरे चार महिने जबरदस्त उपस्थिति ने कार्यकर्ताओं के उत्साह को अभिवर्धित किया। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि परमपूज्य गुरूदेव ने मेरा पीतमपुरा चौमासा फरमाया, जो कार्यभार मुझे सौंपा था, वह पूज्य गुरूदेव के आशीर्वाद एवं ऊर्जा से सानंद सफल हुआ। सम्पूर्ण श्रावक समाज ने सजगता, सक्रियता एवं उत्साह के साथ प्रवचन, कार्यक्रम एवं अनुष्ठान में भाग लेकर अध्यात्म उन्नयन की दिशा में प्रस्थान किया है। संघ भक्ति एवं गुरु भक्ति के संस्कारों से स्वयं को संपोषित किया है। युवा पीढी एवं बाल पीढ़ी का अच्छा जुड़ाव हुआ है, जो हमारे संघ के उज्जवल भविष्य है। तपस्या के क्षेत्र में नया कीर्तिमान बना है। पीतमपुरा के इतिहास में पहली बार पांच मासखमण हुए हैं। धर्मसंघ की प्रभावना को बढ़ाने वाले अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। यह सब परमपूज्य गुरूदेव के आशीर्वाद एवं कृपा की निष्पति है।

साध्वीश्री ने कहा इस चातुर्मास में एक बहन वैराग्य पथ पर बढ़ने के लिए तैयार हुई है, यह हमारे चातुर्मास की सबसे बड़ी उपलब्धि है। अब हमारा विहार है, पूज्य प्रवर के निर्देशानुसार अब हमें सिंवाची मालाणी की ओर जाना है, जितना संभव हो विहार में सहयात्री बनें।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्व्यशाजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, अभातेमम की उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, जैविभा के उपाध्यक्ष पन्नालाल बैद, अणुविभा के प्रधान न्यासी तेजकरण सुराणा, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष विमल बैंगानी, पीतमपुरा सभाध्यक्ष लक्ष्मीपत भुतोड़िया आदि अनेकों संस्थाओं के पदाधिकारियों, खिलोनी देवी परिवार से राकेश जैन, महेश जैन, ललित जैन, आदि अनेक वक्ताओं ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। चोखले के सभाओं के पदाधिकारियों ने भावपूर्ण विदाई गीत की प्रस्तुति।

इंदौर

साध्वी रचनाश्रीजी ने जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित मंगल भावना समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि इंदौर तेरापंथ समाज सौभाग्यशाली है। क्षेत्र को प्रतिवर्ष पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद के रूप में सतत् चतुर्मास की प्राप्ति होती है। इस चतुर्मास में जिन्होंने प्रवचन में ज्ञानार्जन किया है वह ज्ञानार्जन कि निरंतरता को बनाए रखे एवं जो लाभ नहीं लें सके वे आत्मचिंतन करें। समाज में समय प्रबंधन की अत्यंत आवश्यकता है। परम पावन आचार्य प्रवर धर्मसंघ में धर्मसंघ के प्रत्येक सदस्यों का ध्यान रखते हैं।

मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंजू सिंघी, ललिता बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल की बहिनों एवं कन्याओं ने गीतिका के द्वारा साध्वी वृंद को मंगल भावना व्यक्त की। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष निर्मल नाहटा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा ममता सामोता, तेयुप अध्यक्ष अर्पित जैन, चंद्रकुमार भटेरा, विकास छाजेड़, तरीन मेहता, महासभा के आंचलिक प्रभारी निलेश रांका, ज्ञानशाला की आंचलिक एवं इंदौर की संयोजिका ज्योति छाजेड़ एवं अनेकों श्रावक-श्राविकाओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के मंत्री राकेश भंडारी ने साध्वी वृंद के इंदौर में आगमन से आध्यात्मिक कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी से सबको अवगत करवाते हुए सम्पूर्ण समाज की ओर से क्षमा याचना व्यक्त की। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा की सहमंत्री सुमन दूगड़ ने किया। आभार एंव अपनी मंगल भावना जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के सहमंत्री मनीष दूगड़ ने व्यक्त किया।

नाथद्वारा

साध्वी मंजूयशा जी ठाणा-4 के सफलतम प्रवास और चातुर्मास की संपन्नता पर जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा नाथद्वारा द्वारा मंगल भावना समारोह तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया। साध्वीश्री ने कहा - साधु-साध्वियां जहां भी जाते हैं वहां अध्यात्म की बहार आती है। चातुर्मास का समय निकट आते ही जन-जन के मन में अध्यात्म के प्रति श्रद्धा व भक्ति भावों का संचार होता है।

त्याग, तपस्या एवं ज्ञान आराधना करने से भावना जागृत होती है। साधु-साध्वियों के मुख से अर्हत वाणी श्रवण करने को मिलती है। प्रेरणादाई प्रवचन सुनने से जीवन की दिशा एवं दशा बदलती है। अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है और शुभ कर्म का बंध होता है।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि गुरु निर्देशानुसार हम नाथद्वारा चातुर्मास करने आए। पूरे श्रावक समाज ने प्रवचन, सेवा-उपासना कार्यक्रम आदि सभी में बड़े उत्साह पूर्वक भाग लेकर चातुर्मास को सफल बनाया। इस सफलता के पीछे सबसे बड़ा गुरु का आशीर्वाद होता है।

श्रावकों की उपस्थिति अच्छी होती है तो साधु-संतों को भी काम करने का आनंद आता है। यहां का श्रावक समाज संघपति के प्रति, साधु संतों के प्रति, अध्यात्म के प्रति समर्पित है। श्रावक-श्राविका समाज में धार्मिक लगन है। तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति आदि सभी संस्थाएं बड़ी जागरूक हैं।

इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभा जी, साध्वी इंदुप्रभा जी व साध्वी मानसप्रभाजी ने गीत एवं भाषण द्वारा अपनी अभिव्यक्ति दी। सभा अध्यक्ष विश्वजीत कर्णावट, सकल जैन समाज अध्यक्ष ईश्वर सिंह समोता, तेयुप अध्यक्ष हितेश हिरण, महिला मंडल मंत्री सविता कोठारी, सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला आदि के सदस्यों तथा श्रावक-श्राविका समाज ने विविध विधाओं में साध्वी वृंद के प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

रोलिंग शील्ड भाषण एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा चेन्नई के तत्वावधान में मुनि हिमांशुकुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य में दो विषयों- 'सोशल मीडिया का हमारे जीवन पर प्रभाव' व 'युवा पीढ़ी अध्यात्म से कैसे जुड़े?' पर 'पूनमचंद प्रकाशचंद बोकड़िया आजीवन रोलिंग शील्ड भाषण प्रतियोगिता' आयोजित हुई।

मुनिश्री द्वारा महावीर स्तुति के पश्चात सभाध्यक्ष अशोक खतन्ग ने स्वागत स्वर में मुनिद्वय के प्रति कृतज्ञता तथा उपस्थित श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी प्रतिभागियों को अग्रिम शुभकामनाएं संप्रेषित की। निर्णायक द्वय गौतम चंद सेठिया एवं पुष्पा हिरण के संयुक्त निर्णय के आधार पर प्रीति छाजेड़ को शील्ड विजेता घोषित किया गया। द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर क्रमशः हार्दिक सिंघवी और स्वरूपचंद दांती रहे। मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी ने भी अपने संबोधन में विषय पर अपने विचारों के साथ प्रतिभागियों की तैयारी व प्रस्तुतिकरण पर प्रमोद भाव अभिव्यक्त किये। गौतम चंद सेठिया ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी संभागियों को पुरस्कृत किया गया। संचालन संयोजक देवीलाल हिरण ने किया।

'भंवरलाल प्रकाशचंद मुथा प्रश्नमंच रोलिंग शील्ड प्रतियोगिता' में प्रतिभागियों को 6 टीमों में विभाजित किया गया। तत्व ज्ञान और प्रेक्षा ध्यान से संबंधित प्रश्नों पर आधारित इस प्रतियोगिता का संचालन संयोजक कमला गेलड़ा ने किया। सुंदर व रोचक ढंग से अनेक राउंड के बाद समान अंक प्राप्त करने वाली चार टीमों के मध्य मुनिश्री हिमांशुकुमारजी द्वारा पूछे गए प्रश्नों के माध्यम से विजेताओं का निर्धारण हुआ। पुष्पा हिरण, वसंता बाबेल व प्रिती छाजेड़ की टीम 'आर्जव' ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विजेता शील्ड पर अधिकार किया।

भारती मुथा, किरण मुथा व सपना सेठिया की टीम 'क्षान्ति' ने द्वितीय और टीम 'लाघव' से पूजा भंडारी, गरिमा आच्छा और प्रियंका भटेवरा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगिता को सफ़ल बनाने में संयोजक द्वय कमला गेलड़ा एवं मनोज डुंगरवाल का श्रम व सहयोग रहा। देवीलाल हिरण ने अंक गणक और अनिल बोथरा ने समय पालक की भूमिका निभाई। प्रायोजक परिवार से प्रकाशचंद मुथा एवं सूरज देवी मुथा विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभा द्वारा सभी प्रतिभागियों को पुरस्कारों की घोषणा की गई।

ऐतिहासिक चातुर्मास अविस्मरणीय रहेगा

उदयपुर।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में मंगल भावना समारोह के कार्यक्रम का समायोजन हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि असली अमीर वे होते हैं जिनके पास अध्यात्म की दौलत होती है। लोग दवाओं की ताकत पर भरोसा करते है, जहां दवा काम नही करती वहां दुआ चमत्कार कर देती है। उदयपुर में शुद्ध हवा, दवा और दुआ का त्रिवेणी संगम है। हमने अनुभव किया कि उदयपुर वासियों ने सब कुछ यूनिक कर दिखाया है। गुरू कृपा से आपने जिनशासन का गौरव बढाया है। भक्तों ने भिक्षु शासन का कीर्ति ध्वज लहराया है। यह साताकारी क्षेत्र है और चारित्रात्माओं की सेवा के कोई प्रति जागरूकता अनुकरणीय है।

आपने आगे कहा कि 3 V विद्या, विनय, विवेक से हर इंसान विजेता बने और सबके पास ये रहे। 3 S संस्कार, समर्पण और संयम को मोबाइल की तरह साथ रखें और जीवन गुलशन गुलाब की तरह महकता रहे। साध्वी श्री ने प्रायः सभी श्रावक-श्राविकाओं की सेवाओं का उल्लेख किया। मंगल भावना समारोह में सभाध्यक्ष कमल नाहटा, तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सीमा बाबेल आदि ने साध्वीश्री के प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम में The Best, The Wonderful, The Beautiful 'सद्भावना सेलिब्रेशन एक्सप्रेस' का रचनात्मक कार्यक्रम हुआ जिसमें पूरे चातुर्मास की विभिन्न झलकियां तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत की गई। महिला मंडल ने अपनी स्वर लहरियों के साथ गीत का संगान किया। डॉ. साध्वी परमयशाजी, साध्वी विनम्रयशाजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी और साध्वी कुमुदप्रभाजी ने 'उदयपुर क्षेत्र साताकारी आस्था श्रद्धा मनहारी' गीत का संगान किया।

संक्षिप्त खबर

पैंसठिया यंत्र का शक्तिवर्धक आध्यात्मिक अनुष्ठान

गांधीनगर। साध्वी उदितयशाजी जी के सान्निध्य में लाल एवं सफेद परिधान में साधक-साधिकाओं को क्लीं मंत्र के पिरामिड में अवस्थित किया गया। चौबीस तीर्थंकरों की लयबद्ध स्तुति के साथ यंत्र दर्शन के द्वारा सकारात्मक प्रकंपनों को उत्पन्न किया गया। साधक-साधिकाओं ने भावपूर्ण आराधना की। साध्वी उदितयशाजी ने पैंसठिया यंत्र की रचना का महत्व बताते हुए कहा - हम जो भी बोलते हैं उसकी एक आकृति बनती है। सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों का प्रभाव एवं क्षेत्र आकृति के आधार पर बनता है। लोगस्स एवं पैंसठिया यंत्र में साम्यता है। चौबीस तीर्थंकरों के पच्चीस नाम वहां है इसी अंक को संभवतः ध्यान में रख कर इस की कल्पना की गई है। दोनों में 7-7 पद है। लोगस्स भी एक शक्तिशाली मंत्र है। साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी भव्ययशाजी एवं साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने मंत्रों के द्वारा साधकों को ध्यान का प्रयोग करवाया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

जयपुर। तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा डॉ. बी लाल इन्स्टीट्यूट् ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, जयपुर के परिसर में गुलाब कौशल्या चैरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से अक्टूबर माह का तृतीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 34 यूनिट रक्त का संग्रहण संतोकबा दुर्लभजी हॉस्पिटल ब्लड बैंक द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 'शासनसेवी' डॉ. नरेश मेहता, तेयुप जयपुर अध्यक्ष गौतम बरड़िया, पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य, डॉ. बी लाल इन्स्टीट्यूट् ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, जयपुर के डायरेक्टर सक्षम गुप्ता ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम की कुशल संयोजना में मुख्य संयोजक करण नाहटा, संयोजक रवि छाजेड़, रोहित बोथरा का श्रम उल्लेखनीय रहा।

गुरुकृपा से कोई भी सपना नहीं रहा अधूरा

कांदिवली।

सफलतम चातुर्मास के उपलक्ष में मंगलभावना समारोह का आयोजन श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर विशाल धर्म सभा के मध्य हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- आज मुझे प्रसन्नता है कि परम पूज्य गुरूदेव ने जो कार्य भार सौंपा, वह गुरु कृपा और ऊर्जा से सानंद संपन्न हुआ। चातुर्मास में करणीय कोई भी कार्य अधूरा नहीं रहा।

हमने प्रवचन, प्रेरणा के माध्यम से श्रावक परिवार को अध्यात्म पान कराने का प्रयास किया। श्रावक समाज को साधु साध्वियों का आश्रय स्थल कहा जाता है चातुर्मास में सभी संस्थाओं ने सक्रियता से अपने दायित्व का निर्वहन किया।

साध्वीश्री ने कहा हर व्यक्ति अपने श्रम, शक्ति और समय का सद् उपयोग करे, सही दिशा में प्रस्थान करे, अपने आन्तरिक ऐश्वर्य का संवर्धन करे। कंघे की तरह जीवन में आने वाली उलझनों को सुलझाए दर्पण की तरह अपने खामियों का दर्शन कर परिष्कार करे और बाल की तरह दिल को कोमल बनाने का प्रयास करे।

प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा हम सभी तेरापंथ संघ के अनुयायी हैं। यहां संघ का महत्व है व्यक्ति का नहीं। संघ ही त्राण, प्रतिष्ठा, गति और शरण है। गुरू जीवन के आधार हैं। हमारे भीतर गुरू भक्ति और संघ भक्ति बढ़ती रहे।

मंगल भावना समारोह कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित हुआ। साध्वी वृन्द एवं पलक हिरण ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी वृंद द्वारा द्वारा प्रस्तुत 'अच्छा! तो हम चलते हैं' कार्यक्रम ने परिषद् को भावुक बना दिया।

इस अवसर पर श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़, तेरापंथ सभा मुंबई अध्यक्ष माणक चंद धींग, तेरापंथ सभा कांदिवली अध्यक्ष ज्ञानमल भंडारी, कार्यकारी अध्यक्ष मुकेश कुमठ, तेरापंथ सभा अध्यक्ष गणेश कोठारी, मालाड तेरापंथ सभा अध्यक्ष गणेश कोठारी, बोरिवली सभाध्यक्ष संगीता सिंघी, गोरेगांव सभाध्यक्ष अशोक चौधरी, आदि अनेकों संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी मंगल भावनाएं व्यक्त की।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने समस्त सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों की सेवा का उल्लेख करते हुए नामोल्लेख पूर्वक सबसे खमतखामणा किया।

कांदिवली और मालाड महिला मंडल ने गीतिका एवं कार्यक्रम प्रस्तुत किया। तेरापंथ कन्या मंडल प्रभारी दर्शना बोहरा एवं संयोजिका याशिका दुगड़ ने सुन्दर प्रस्तुति दी। जिनल धाकड़ और दृष्टि धाकड़ न संवाद शैली में मंगल भावनाएं व्यक्त की। कमला सुराणा, कमल पटावरी, कलकती जैन ने अलग-अलग मंगल प्रस्थान गीत प्रस्तुत किए।

दो चरण में आयोजित कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन मुंबई तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष दलपत बाबेल एवं तेरापंथ युवक परिषद्, अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने किया।

संयम की ताकत अद्भुत है

माधावरम्, चेन्नई।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने कहा- भारतीय संस्कृति में संयम का अपना महत्व है। आज भी इस संस्कृति का सम्मान है। जैन, बौद्ध और वैदिक तीनों परंपरा में संयम परम्परा का महत्व है।

संयम की ताकत अद्भुत है, इसके आधार पर संपूर्ण संसार टिका हुआ है। यह एक पवित्र संस्कार है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा- जैसे हिटलर और ईसा, राम और रावण, दिन एवं रात, स्फटिक और कांच में अंतर है, वैसे ही संयम और असंयम, योग एवं भोग में अंतर है। संयम का तात्पर्य है - पापकर्म से उपरत होना।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। कार्यशाला के अन्तर्गत सचित्त-अचित्त, सूझता-असूझता, पाडिहारिय, अहिंसा, दान आदि अनेक बातों की छोटी-छोटी जानकारियां साध्वीश्री द्वारा समझाई गई। कार्यशाला में लगभग 50 बच्चों ने भाग लिया।

कार्यशाला की सुव्यवस्था में इन्द्रा रांका, नीलम आच्छा व कविता मेडतवाल की सक्रिय भूमिका रही। साधु जीवन के उपकरणों से मेमोरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम कुलदीप रांका, तन्मय जैन, हर्षित जैन द्वितीय तथा तृतीय दृष्टि बैद रही। धन्यवाद ज्ञापन प्रशिक्षिका नीलम आच्छा ने दिया।

स्वाध्याय से मिलती है ज्ञान रूपी रोशनी

बेंगलुरु।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा गांधीनगर के तत्वावधान में साध्वी उदितयशा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में प्रशिक्षिका बहनों के लिए 'ज्ञान की रोशनी' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री ने इस अवसर पर कहा कि ज्ञान एक पवित्र चीज है, स्वाध्याय करने से ज्ञान रूपी रोशनी मिलती है, हमें सत्साहित्य का स्वाध्याय करना चाहिए। ज्ञान रूपी रोशनी से स्वयं के भीतर का अंधकार मिटता है। प्रशिक्षिकाएं अपने ज्ञान को ठोस एवं गहरा बनाएं जिससे वे अपने मूल को सुरक्षित रख सकती हैं।

साध्वी संगीतप्रभा जी ने सम्यक् ज्ञान का महत्व बताते हुए कहा कि सम्यक् ज्ञान से हम अपने भीतर के द्वीप को प्रज्वलित कर सकते हैं। साध्वी भव्ययशाजी ने प्रशिक्षिकाओं के श्रम की सराहना की। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत स्नातक उत्तीर्ण करने वाली प्रशिक्षिकाओं का सम्मान भी किया गया। केंद्र द्वारा बेंगलुरु के राजराजेश्वरी नगर ज्ञानशाला को श्रेष्ठ ज्ञानशाला एवं मुख्य प्रशिक्षिका मंजू गन्ना को श्रेष्ठ प्रशिक्षिका सम्मान से सम्मानित किया गया। आंचलिक संयोजक माणक संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए।

संचालन क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया ने किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, पदाधिकारी गण के साथ अनेक गणमान्य जनों की उपस्थित रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

संक्षिप्त खबर

हस्तलिखित, कलात्मक मनभावक प्रदर्शनी का आयोजन

अमराईवाड़ी। साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में सिंघवी भवन में कलात्मक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। तेरापंथ की कलाओं में निखरता साधु-साध्वियों के सूक्ष्म पत्र दिखाते हुए साध्वी काव्यलताजी ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ विकास का खजाना है। साधु-साध्वियों ने श्रम पूर्वक सूक्ष्म अक्षरों में दसवैकालिक सूत्र, भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि को एकाग्रता पूर्वक लिखा है। टोपसी, रजोहरण आदि अनेक उपयोगी वस्तुओं पर कलात्मकता को देख हर कोई आश्चर्य चकित था। सोहनलाल भरसरिया, सुरेश दक, दिनेश चण्डालिया, मुकेश सिंघवी, सुनील चिप्पड़ आदि ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। साध्वी ज्योतियशाजी, साध्वी सुरभिप्रभाजी, साध्वी राहतप्रभाजी का सराहनीय श्रम रहा।

रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

गंगाशहर। तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल गंगाशहर द्वारा वेल्थ आउट ऑफ़ वेस्ट और रंगोली कंपटीशन का आयोजन साध्वी चरितार्थप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में शांति निकेतन में किया गया। प्रतियोगिता में कुल 15 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया व दीपावली, भगवान महावीर, चाइल्ड लेबर, सुपात्र दान आदि विषयों पर कुल 7 रंगोलियां बनाई गई। वेल्थ आउट ऑफ़ वेस्ट प्रतियोगिता में कन्याओं ने अनुपयोगी चीजों से सुंदर आर्टिकल्स बनाए। अभातेमम सदस्या ममता रांका व तेरापंथ महिला मंडल गंगा शहर की अध्यक्षा संजू लालाणी ने निभाई। भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। वेल्थ आउट ऑफ़ वेस्ट प्रतियोगिता में प्रथम प्रिया संचेती, द्वितीय भाविनी संचेती व तृतीय मुस्कान सेठिया रही। प्रथम सोनिका-खुशबू चोपड़ा, द्वितीय प्रिया-भाविनी संचेती व तृतीय सोनाली भूरा-कोमल बोथरा रही।

महावीर ज्ञान प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम

पाली। तेरापंथ भवन पाली में 'भगवान महावीर को जानो' कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनि सुमति कुमार जी ने भगवान महावीर के जीवन वृत्तांत के बारे में जानकारी दी। मुनि देवार्यकुमारजी ने जप का प्रयोग करवाया। कार्यशाला के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा 'महावीर ज्ञान प्रश्नोत्तरी' का कार्यक्रम रखा गया। कार्यशाला में उपस्थित 80 श्रावक-श्राविकाओं में से 50 सदस्यों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। तेरापंथ महिला मंडल पाली की अध्यक्षा सुषमा डागा, मंत्री सीमा मरलेचा, कोषाध्यक्ष बबिता सालेचा, उपमंत्री मीना मंडोत एवं मधु बांठिया ने प्रतियोगिता की व्यवस्था में सराहनीय भूमिका निभाई। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा पाली के अध्यक्ष भूरचंद तातेड, युवक परिषद् के मंत्री पीयूष चोपड़ा एवं कन्या मंडल संयोजिका तृप्ति तातेड़ का भी सहयोग रहा।

खुशियों की दिवाली

उदयपुर। तेरापंथ युवक परिषद, उदयपुर के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल उदयपुर के सदस्यों द्वारा सेवा कार्य के तहत टाइगर हिल्स स्थित कच्ची बस्ती में निराश्रित एवं गरीब परिवारों व बच्चों को आवश्यक सामग्री का वितरण किया गया। सेवा कार्य के अंतर्गत 51 परिवारों के 300 लोगों को सहयोग किया गया। किशोर मंडल प्रभारी अंकित रूनवाल ने बताया कि इस कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल उदयपुर का भी विशेष सहयोग रहा। तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा ने सभी अर्थ प्रदाताओं, किशोर मंडल टीम, व महिला मंडल के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में किशोर मंडल सहप्रभारी मुदित कच्छारा, संयोजक देवांश नाहर, सह-संयोजक नमन सोनी, कुश बाबेल, सौम्य डागा व अन्य साथियों के साथ ही महिला मंडल अध्यक्षा सीमा बाबेल, मंत्री ज्योति कच्छारा व महिला मंडल से शशि मेहता, अनीता बाबेल, गीता चौरडिया, अनीता सोनी आदि उपस्थित रहे।

वीतरागता के पथ पर बढ़ने से हो सकती है अनंत आनंद की प्राप्ति

विजयनगर।

अभातेयुप निर्देशित वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन साध्वी सिद्धप्रभा जी के सान्निध्य मे तेयुप विजयनगर द्वारा तेरापंथ भवन, विजयनगर में किया गया।

वीतराग पथ कार्यशाला की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नवकार मंत्र के मंत्रोच्चार से हुई।

तेयुप विजयनगर अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस कार्यशाला से संयम जीवन की प्रेरणा प्राप्त होगी।

वीतराग पथ कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वी सिद्धप्रभा जी ने कहा- वीतरागी बनना हमारा परम लक्ष्य होना चाहिए। वीतरागी बनने के लिए प्रमाद से रहित होकर कर्मों के बंधन से बचना चाहिए।

साध्वीश्री ने आचार्य श्री तुलसी के महनीय अवदान ज्ञानशाला के वर्तमान स्वरूप की परिकल्पना हेतु गुरुदेव तुलसी का मंगल स्मरण किया।

साध्वी श्री ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा प्रदत इस विशेष आयाम का युवक परिषद् द्वारा आयोजन संयम मार्ग को प्रशस्त करने वाला बने। साध्वी श्री ने साधु जीवन और श्रावक जीवन की महत्ता पर बल दिया। उपस्थित बच्चों को संयम की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने कार्यशाला पर विचार व्यक्त करते हुए चार गति का वर्णन किया। बच्चों को विद्वान, महान और अच्छा साधु बनने के लिए दर्शन केंद्र पर प्रयोग करवाया। ज्ञानार्थियों से प्रश्नोत्तरी द्वारा कार्यक्रम को रोचकता प्रदान की गई।

इस अवसर पर अभातेयुप से विकास बाँठिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू गादिया ने शुभकामनायें संप्रेषित की। परिषद् पदाधिकारी, सदस्य, ज्ञानशाला संयोजिका ममता मांडोत एवं प्रशिक्षिका बहनों की उपस्थिति एवं सराहनीय सहयोग रहा।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री संजय भटेवरा ने किया। कार्यशाला में लगभग 135 लोगों की सहभागिता दर्ज हुइ। आभार ज्ञापन कार्यशाला संयोजक देवांग बैद ने किया।

वॉकथॉन व फेमिना कनेक्ट का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद द्वारा वॉकथॉन व फेमिना कनेक्ट का आयोजन मालकोटे पार्क नारायण गुड़ा में हुआ। कार्यक्रम की शुरुवात नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई।

टीपीएफ हैदराबाद अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने पधारे हुए सभी सदस्यों का स्वागत किया व सभी को टीपीएफ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने व एक-दूसरे से जुड़े रहकर टीपीएफ को आगे बढ़ाने में योगदान देने का आह्वान किया। राष्ट्रीय फेमिना संयोजक रक्षिता बोहरा ने टीम टीपीएफ हैदराबाद को इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए शुभकामनाएं दी व आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करते रहने का सुझाव दिया।

वॉकथॉन के साथ - साथ अनेक गतिविधियां जैसे योगा, प्रेक्षाध्यान, नेटवर्किंग आदि भी की गई।

कार्यक्रम में योग प्रशिक्षक पूजा पटावरी ने कई प्रकार के आसन, प्राणायाम, ध्यान करवाया तथा योग के फायदे भी बताए।

साथ ही सभी को प्रतिदिन योग करने के लिए कहा और प्रेक्षाध्यान ऐप डाउनलोड कर उसका उपयोग करने का सुझाव दिया।

कार्यक्रम का संयोजन टीपीएफ फेमिना हैदराबाद की संयोजक व सहमंत्री वर्षा बैद ने किया। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष अणुव्रत सुराणा ने किया।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

मदनगंज किशनगढ़।

अणुव्रत चौक स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी शांताकुमारी जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला का वार्षिकोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री ने नवकार मंत्र से किया। मंगलाचरण ज्ञानशाला के बच्चों ने ज्ञानशाला गीत से किया।

मुख्य अतिथि के रूप में ज्ञानशाला जयपुर के आंचलिक संयोजक सौरव जैन एवं सहसंयोजक कमलेश बरडिया उपस्थित थे। साध्वी शांताकुमारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा - ज्ञानशाला में बच्चो में संस्कारों का रोपण किया जाता है। साध्वी श्री ने अभिभावकों को बच्चों के आध्यात्मिक व नैतिक विकास के लिए प्रेरित किया।

'शासनश्री' साध्वी चंद्रावतीजी, साध्वी ललितयशाजी, सभा मंत्री डॉ. अजय कवाड़, महिला मंडल मंत्री कविता गेलडा, युवक परिषद, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने अपने विचार वक्तव्य और गीतिकाओं द्वारा प्रस्तुत किए।

बच्चों ने जीवन को भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करने की प्रेरणा देते हुए अपनी प्रस्तुति दी। सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव को नाटिका के द्वारा प्रदर्शित किया। आंचलिक संयोजक सौरभ जैन ने ज्ञानशाला का महत्व बताया।

सभी प्रशिक्षिकाओं और बच्चों को प्रोत्साहित किया गया। प्रतिभा कोठारी ने आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष पन्ना लाल छाजेड़, महिला मंडल अध्यक्ष किरण देवी बोथरा, युवक परिषद अध्यक्ष रौनक घोड़ावत, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनें एवं श्रावक समाज उपस्थित था। कार्यक्रम का कुशल संचालन आंचलिक संयोजक अंजू छाजेड़ ने किया।

संबोधि

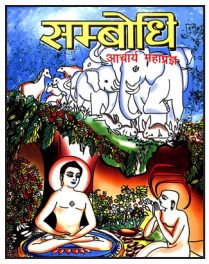

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

जीवन में सबसे पहला कदम ही मुख्य होता है। अगर वह गलत दिशा में उठ जाता है तो आदमी भटक जाता है। यदि वह सही दिशा में उठ जाए तो मंजिल निकट हो जाती है। यह कहना चाहिए कि प्रथम कदम में ही प्रायः व्यक्ति चूक जाता है।

इस उलझन भरे विश्व में सही दिशा-बोधक कठिनतम है। एक कवि ने कहा है-'कुछ व्यक्ति अज्ञान के कारण नष्ट होते हैं, कुछ व्यक्ति प्रमाद के कारण नष्ट होते हैं, कुछ ज्ञान के अवलेप (विद्या के घमंड) के कारण नष्ट होते हैं और कुछ दूसरे नष्ट व्यक्तियों के संपर्क में आकर नष्ट होते हैं।' धर्म की दिशा में पहला पाठ ठीक मिल जाए तो आत्म-दर्शन कोई असाध्य नहीं है।

महावीर ने इसकी पूरी कड़ी प्रस्तुत की है। धर्म के श्रवण से उसका ज्ञान होता है और उस ज्ञान से व्यक्ति को विज्ञान सत्यासत्य के निर्णय की क्षमता मिलती है। वह असत्य को असत्य और सत्य को सत्य देख लेता है। फिर उसके प्रत्याख्यान होता है। वह असत्य के आवरण जाल से मुक्त हो जाता है। फिर उसके संयम होता है। वह स्वभाव में चला आता है। स्वभाव में स्थिर होने पर विजातीय तत्त्वों के आगमन का द्वार बन्द हो जाता है। भीतर तप की अग्नि प्रज्वलित हो जाती है। वह अग्नि कर्म (विजातीय मल) को जलाकर भस्म कर देती है। साधक शुद्ध हो जाता है। वह स्वयं के ही स्वभाव से छलाछल भर जाता है और पूर्ण अक्रिय हो जाता है। यह समुचित कदम का सुफल है।

१४. निश्चये व्रतमापन्नो, व्यवहारपटुः गृही।
समभावमुपासीनोऽनासक्तः कर्मणीप्सिते।।

जो गृहस्थ अंतरंग में व्रतयुक्त है और व्यवहार में पटु है, वह समभाव की उपासना करता हुआ इष्टकार्य में आसक्त नहीं होता। श्रावक एक सामाजिक व्यक्ति होता है।

उस पर घरेलू, सामाजिक और राजनैतिक जिम्मेदारियां भी होती है। धर्म की आराधना करता हुआ वह उनसे विमुख नहीं हो सकता। संयम और व्रत-त्याग में निष्ठा रखता हुआ भी व्यवहार जगत् से अपने संबंध बनाये रखता है। लेकिन अंतर इतना है कि यदि वह संयमयुक्त है तो गृह-कार्य करता हुआ भी उनमें अनुरक्त नहीं होता; जबकि एक असंयमवान व्यक्ति उन्हीं कार्यों में रचा-पचा रहता है। आचार्य पूज्यपाद ने कहा-'जो केवल व्यवहार जगत् में जागरूक रहता है, वह आत्म-जगत् की दृष्टि से सुप्त है और जो आत्म-जगत् में जागृत रहता है वह व्यवहार जगत् में सुप्त है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भिक्षु युग

साध्वीश्री बीजांजी (रीयां) दीक्षा क्रमांक 40

साध्वीश्री प्रकृति से भद्र और कोमल थे। संयम साधना में विशेष जागरुक थे। आपने जीवन के अन्तिम तीन वर्षों में जो संलेखना तय किया उसकी तालिका इस प्रकार है– उपवास/76, 2/152, 3/32, 4/38, 5/14, 6/6, 7/3, 8/1

आपका यह अधिकांश तप चौविहार (निर्जल) था। पारणे में विगय का कम सेवन करती। प्रायः अरस–नीरस आहार करती।

इस प्रकार घोर तपस्या कर उज्ज्वल भावों से आजीवन अनशन ग्रहण किया। जो नौ दिन का आया। आपके तप और अनशन के प्रभाव से चतुर्विध संघ की प्रभावना हुई।

– साभारः शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

कहीं वंदना और कहीं बंदी

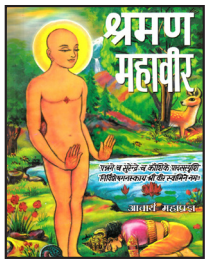

६. कूपिय सन्निवेश के आरक्षकों ने भगवान् को गुप्तचर समझकर बन्दी बना लिया। भगवान् के मौन ने उनके सन्देह को पुष्ट कर दिया। यह घटना पूरे सन्निवेश में बिजली की भांति फैल गई। वहां भगवान पार्श्व की परम्परा की दो साध्वियां रहती थीं। एक का नाम था विजया और दूसरी का नाम था प्रगल्भा। इस घटना की सूचना पाकर वे आरक्षि-केन्द्र पहुंचीं। उन्होंने आरक्षकों को भगवान् का परिचय दिया। भगवान् मुक्त हो गए।

यह नियति की कैसी विडंबना है कि भगवान् मुक्ति की साधना में रत हैं और कुछ उन्हें बन्दी बनाने में प्रवृत्त हैं।

लोहार्गला में भी भगवान् के साथ यही हुआ। उस राज्य के अपने पड़ोसी राज्य के साथ तनावपूर्ण सम्बन्ध चल रहे थे। वहां के अधिकारी आने जाने वालों पर कड़ी निगरानी रखते थे। उन्हीं दिनों भगवान् महावीर और गोशालक वहां आ गए। प्रहरियों ने उनसे परिचय मांगा। उन्होंने वह दिया नहीं। उन्हें बन्दी बनाकर राजा जितशत्रु के पास भेजा गया। नैमित्तिक उत्पल अस्थिकग्राम से वहां आया हुआ था। वह राज्य सभा में उपस्थित था। वह भगवान् को बन्दी के रूप में देख स्तब्ध रह गया। वह भावावेश की मुद्रा में बोला, 'यह कैसा अन्याय!' राजा ने पूछा 'उत्पल ! राज्य अधिकारियों के कार्य में हस्तक्षेप करना भी क्या कोई निमित्तशास्त्र का विधान है?'

'यह हस्तक्षेप नहीं है, महाराज। यह अधिकारियों का अविवेक है।'

'यह क्या कह रहे हो, उत्पल? आज तुम्हें क्या हो गया?'

'कुछ नहीं हुआ, महाराज! मेरा सिर लाज से झुक गया है?'

'क्यों?' 'क्या आप नहीं देख रहे हैं, आपके सामने कौन खड़े हैं?'

'बन्दी हैं, मैं देख रहा हूं।'

'ये बन्दी नहीं हैं। ये मुक्ति के महान् साधक भगवान् महावीर हैं।' महावीर का नाम सुनते ही राजा सहम गया। वह जल्दी से उठा और उसने भगवान् के बंधन खोल दिए और अपने अधिकारियों की भूल के लिए क्षमा मांगी।

भगवान् बन्दी बनने के समय भी मौन थे और अब मुक्ति के समय भी मौन। उनका चित्त मुक्ति का द्वार खोल चुका था, इसलिए वह शरीर के बन्दी होने पर रोष का अनुभव नहीं कर रहा था और मुक्त होने पर हर्ष की हिलोरें नहीं ले रहा था। बेचारे बन्दी को बन्दी बनाने का यह अभिनव प्रयोग चल रहा था।

८. इस दुनिया में जो घटित होता है, वह सब सकारण ही नहीं होता। कुछ-कुछ निष्कारण भी होता है। हिरण घास खाकर जीता है, फिर भी शिकारी उसके पीछे पड़े हैं। मछली पानी में तृप्त है, फिर भी मच्छीगर उसे जीने नहीं देते। सज्जन अपने आप में सन्तुष्ट है, फिर भी पिशुन उसे आराम की नींद नहीं लेने देते।

भगवान् तोसली गांव के उद्यान में ध्यान कर खड़े थे। संगमदेव उनके कार्य में विघ्न उत्पन्न कर रहा था। वह साधु का वेश बना गांव में गया और सेंध लगाने लगा। लोग उसे पकड़कर पीटने लगे। तब वह बोला, 'आप मुझे क्यों पीटते हैं?'

'सेंध तुम लगा रहे हो, तब किसी दूसरे को क्यों पीटें?'

'मैं अपनी इच्छा से चोरी करने नहीं आया हूं। मेरे गुरु ने मुझे भेजा है, इसलिए आया हूं।'

'कहां है तुम्हारे गुरु?'

'चलिये, अभी बताये देता हूं।' (क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

Center Page

Center Page

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

अदत्ताग्रहणम् अस्तेयम्

कुछ प्राकृतिक घटनाओं का लोकपाल तथा उनके सहयोगी देवों से संबंध रहता है। हर प्राकृतिक घटना में उनका हस्तक्षेप नहीं भी हो, किन्तु प्राकृतिक घटनाएं उनकी जानकारी में रहती हैं, यह स्पष्ट है। देव प्राकृतिक घटनाओं में परिवर्तन भी कर सकते हैं। अल्पवृष्टि, महावृष्टि, बादलों की गर्जना, बिजली का कोंधना ये घटनाएं देवकृत भी होती हैं। प्राचीनकाल में प्राकृतिक आपदाओं और रोगों को देवकृत माना जाता था। उनकी शांति के लिए देवों को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया जाता, उनकी पूजा और आराधना की जाती। हमारी भूमि, मनुष्य और दिव्यशक्ति–तीनों में परस्पर संबंध है। प्राकृतिक घटनाओं से संबंधित यह तथ्य भगवती सूत्र के तीसरे शतक में भी उपलब्ध है। शतक के आमुख में भी आचार्य महाप्रज्ञ ने इसका विवेचन किया है।

प्रामाणिक व्यक्ति का अपना प्रभाव होता है। ऐसा लगता है कि मनुष्य क्या, कई बार देव भी उसके बात को अस्वीकार नहीं कर सकते।

यह विचारणीय है व्यक्ति शाश्वत सुखों को छोड़कर अशाश्वत सुखों में लिप्त बनता है और बहुधा वह दोनों से ही वंचित हो जाता है।

यो ध्रुवाणि परित्यज्य, अध्रुवाणि निषेवते।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति, अध्रुवं नष्टमेव हि।।

जो ध्रुव (नित्य) को छोड़कर अध्रुव (अनित्य) का सेवन करता है, उसके ध्रुव भी नष्ट हो जाता है और अध्रुव तो नष्ट होने वाला है ही।

तीव्र आसक्ति से जो पाप कर्म सेवित होता है उसका अनुबन्ध पाप होता है। चार प्रकार के कर्म होते हैं-

१. पुण्यानुबन्धी पुण्य– कुछ कर्म पुण्य प्रकृति वाले होते हैं और उनका अनुबन्ध भी पुण्य (शुभ) होता है। जिस व्यक्ति के मन में आसक्ति अल्प होती है, उसके जो पुण्य कर्म का बन्ध होता है, वह उसे अशुभ (पाप) के चक्र में फंसाने वाला नहीं होता, उसमें मूढ़ता उत्पन्न करने वाला नहीं होता। इस प्रसंग में भरत चक्रवर्ती का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। उसने पूर्वोपार्जित पुण्य का भोग किया, किन्तु वह उसके अधोगति का निमित्त नहीं बन सका। उसने कल्याण का मार्ग स्वीकार किया।

२. पापानुबन्धी पुण्य– कुछ कर्म पुण्य प्रकृति वाले होते हैं, परन्तु उनका अनुबन्ध पाप (अशुभ) होता है। जिस व्यक्ति के मन में आसक्ति प्रबल होती है, उसके जो पुण्य कर्म का बन्ध होता है, वह उसे अशुभ की ओर ले जाने वाला, उसमें मूढ़ता उत्पन्न करने वाला होता है, इस प्रसंग में ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। उसके पूर्वार्ज पुण्यों का उदय उसके अधोगति का निमित्त बन गया। वह मर कर नरक में गया। इसी प्रसंग को लक्ष्य में रखकर निम्नांकित श्लोक मननीय है-

पुण्णेण होइ विहवो,
विहवेण मओ मएण मइमोहो।
मइमोहेण य पाव,
ता पुण्णं अम्ह मा होउ।।

पुण्य से वैभव होता है, वैभव से मद, मद से मतिमोह और मतिमोह से पाप। पाप मुझे इष्ट नहीं है, इसलिए पुण्य भी मुझे इष्ट नहीं है।

३. पुण्यानुबन्धी पाप– कुछ कर्म अशुभ होते हैं, पर उनका अनुबन्ध शुभ होता है। जो अशुभ कर्म तीव्र मोह से अर्जित नहीं होते, वे शुभ कर्म के निमित्त बन जाते हैं। इस प्रसंग में उदाहरण के लिए वे सब व्यक्ति प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जो दुःख से सन्तप्त होकर शुभ की ओर प्रवृत्त होते हैं। अनाथी मुनि के गृहस्थावस्था में आंखों के वेदना हुई और वह उनके शुभ का निमित्त बन गई, उन्होंने मुनित्व स्वीकार कर लिया, कल्याणकारी शुभ कर्म करने में प्रवृत्त हो गए।

४. पापानुबन्धी पाप– कुछ कर्म अशुभ होते हैं और उनका अनुबन्ध भी अशुभ होता है। जिस व्यक्ति के तीव्र आसक्ति पूर्वक अशुभ कर्म का बन्ध होता है, वह उसमें मूढ़ता उत्पन्न करता रहता है।

व्याघ्र आदि हिंसक पशु इस कोटि में रखे जा सकते हैं।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें
abtyptt@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

दिसम्बर 2024 सप्ताह के विशेष दिन

7 दिसम्बर
भगवान
सुविधिनाथ दीक्षा
कल्याणक

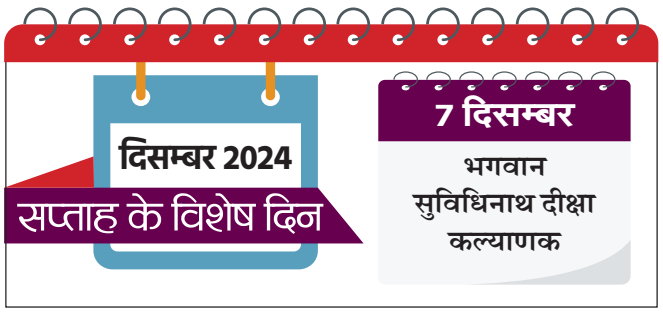

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य श्री जीतमलजी युग

मुनिश्री वृद्धिचंदजी (सूरवाल) दीक्षा क्रमांक 184

मुनिश्री की तपस्या में विशेष रूचि थी। आपने सैंकडो उपवास, बेले, तेले बहुत बार किये। तप तालिका इस प्रकार है– 4/4, 6/3, 7/3, 8/3, 9/3, 10/3, 16/1, 18/1 शीतकाल में 20 वर्ष लगभग एक पछेवड़ी से अधिक कपड़ा नहीं ओढ़ा।

– साभार: शासन समुद्र –

वस्तु के साथ आसक्ति वृत्ति का भी करें त्याग

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में अभातेममं निर्देशित दीपावली कार्यशाला 'आत्मावलोकन' का सफल आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। कार्यशाला में साउथ हावड़ा, उत्तर हावड़ा, मध्य कोलकाता, बेहाला महिला मंडल की बहनों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला का विषय अनासक्त भावना का विकास और आत्मा का विमोचन रखा गया था। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा व्यक्ति को विपुल वैभव प्राप्त हो सकता है। सुख-संपदा प्राप्त हो सकती है। पुत्र, ज्ञाति जन, बंधुजन सब कुछ प्राप्त हो सकते हैं। लेकिन धर्म का मिलना मुश्किल है। धर्म का एक सूत्र है- अनासक्त भावना का विकास। अनासक्त चेतना का विकास होने पर व्यक्ति वीतरागता की ओर प्रस्थान कर सकता है। जब तक देह, नेह, व गेह के प्रति आसक्ति रहेगी तब तक आत्मा का दर्शन दुर्लभ है, वीतरागता का विकास असंभव है। व्यक्ति केवल वस्तु का ही त्याग न करे, वस्तु के साथ आसक्ति वृत्ति का भी त्याग करें।

मुनिश्री ने आगे कहा विसर्जन केवल धन का ही नहीं होता, कषाय का विसर्जन जरूरी है। व्यक्ति आत्मा के विमोचन के लिए क्षमा की साधना करे। क्षमा धर्म का प्रवेश द्वार है, क्षमा जीवन का आभूषण है। व्यक्ति को क्रोध, घृणा, नफरत, वैर से दूर रहना चाहिए। ध्यान साधना के द्वारा अनासक्ति व क्षमा का विकास किया जा सकता है। दीपावली ज्योति का पर्व है। ज्योति के लिए क्षमा जरूरी है। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सभी महिला मंडल के पदाधिकारियों द्वारा गीत संगान से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा की अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया ने दिया। साउथ हावड़ा सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने शुभकामना संप्रेषित की। मुमुक्षु भीखमचंद नखत ने अपने अनुभवों को संजोते हुए विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन मंत्री रेखा बैंगानी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

समृद्ध राष्ट्र योजना संस्कारशाला Way of Happiness का आयोजन

कांटाबांजी। अभातेममं के संस्कारशाला अभियान के अंतर्गत कांटाबांजी के ME स्कूल में बच्चों के बीच कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का विषय था- क्रोधी नहीं सहनशील बनें, आलसी नहीं समय का सदुपयोग करें। कार्यक्रम का शुभारंभ ममता जैन ने महाप्राण ध्वनि से करवाया और इसके लाभ से सभी को अवगत कराया। स्कूल की प्रिंसिपल ने भी बच्चों को मोटिवेट करते हुए कहा कि मनुष्य और पशु में विवेक का अंतर है। हम उसका सदुपयोग कर अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें। सपना जैन ने सबका आभार प्रकट किया।

खुशियों की दिवाली कार्यशाला

अमराईवाड़ी। अभातेममं के तत्वावधान में अमराईवाड़ी महिला मंडल द्वारा आयोजित 'खुशियों की दिवाली' की कार्यशाला साध्वी काव्यलताजी के सानिध्य में रखी गई। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। उपाध्यक्ष रेखा चिप्पड़ ने सभी का स्वागत किया। उपासिका मंजू गेलड़ा ने सभी को आंतरिक दिवाली मनाने की प्रेरणा दी। साध्वी काव्यलताजी ने चार कषाय के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हम भौतिक सुखों वाली दिवाली ना मना कर आंतरिक धर्म आराधना करके दिवाली मनाने का प्रयास करें। अपने भीतर प्रेम और करुणा का भाव लाएं। कार्यशाला के दूसरे चरण में 'अनासक्त भाव और स्वच्छता' विषय पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

आत्मा का विमोचन एवं क्षमा का अभ्यास विषय पर कार्यशाला

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं निर्देशित दीपावली - खुशियों की दीपावली के अंतर्गत आत्मा का विमोचन एवं क्षमा का अभ्यास विषय पर कार्यशाला तथा अनासक्त भावना एवं स्वच्छता विषय पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल राजराजेश्वरी नगर द्वारा रखा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुआ, तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण का संगान किया गया। अध्यक्ष सुमन पटवारी ने सभी का स्वागत - अभिनंदन करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

कार्यक्रम सह संयोजिका सपना छाजेड़ ने मुख्य वक्ता बरखा पुगलिया का परिचय दिया। आशा लोढ़ा ने रंगोली प्रतियोगिता के निर्णायक दीपा मूर्ति का परिचय दिया।

बरखा पुगलिया ने 'आत्मा का विमोचन' विषय पर अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि भगवान महावीर ने आत्म विमोचन के लिए हमारे सामने अनेक सिद्धांत एवं बिंदु उपस्थित किए। जिसका सबसे महत्वपूर्ण और प्रथम बिंदु है क्षमा। एक खुशनुमा और सुखद जीवन जीने के लिए क्षमा का होना आवश्यक है। गलतियां सभी से हो सकती हैं, यह स्वाभाविक है, ऐसे में क्षमता करने और मांगने पर कोई छोटा नहीं होता। क्षमा एक ऐसा गुण है जिसका विकास कर पूरे विश्व को अपना बनाया जा सकता है। समाज, संस्था, परिवार कहीं भी रहें, सहन करना सीखना होगा तभी हम खुशनुमा जिंदगी जी सकते हैं। दीपावली पर घर की सफाई तो सभी करते हैं इस दीपावली पर हम सबको आत्मा की सफाई करनी है, उसे उज्जवल बनाना है। सभी बहनों ने दीप जलाकर यह संकल्प किया कि अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करते हुए जीवन में अनासक्त भावना का विकास करेंगे तथा स्वच्छ एवं सरल जीवन जीने का प्रयास करेंगे। मधु कटारिया द्वारा बहनों को ज्ञानवर्धक गेम खिलाए गए। अनासक्त भावना और स्वच्छता को दर्शाते हुए बड़े उत्साह के साथ रचनात्मक रंगोली की प्रतियोगिता हुई। जिसमें 10 बहनों ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर पूजा बरड़िया, कविता सुराना, द्वितीय सपना तातेड़, जया शामसुखा और तृतीय स्थान पर सीमा सहलोत, प्रिया छाजेड़ रहीं। गेम्स में पूजा पटावरी प्रथम एवं सीमा नाहटा द्वितीय स्थान पर रही।

आरआर नगर ज्ञानशाला को 'उत्तम ज्ञानशाला' का पुरस्कार मिलने पर सेवा दे रही प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजिका रुचिका पटावरी एवं सह संयोजिका सपना छाजेड़ तथा आभार ज्ञापन पदमा महेर द्वारा किया गया। मंडल द्वारा मुख्य वक्ता बरखा पुगलिया और निर्णायक दीपा मूर्ति का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में लगभग 145 बहनों की उपस्थिति रही।

दीपावली पूजन कार्यशाला के विविध आयोजन

क्रमांक	परिषद् / स्थान	सान्निध्य	संस्कारक
1.	गुवाहाटी	मुनि प्रशांत कुमार जी –	राकेश जैन, बाबूलाल सुराणा, जयंत सुराणा, छतर सिंह चौरड़िया, बजरंग डोसी एवं सतीश भादानी
2.	राजराजेश्वरी नगर	-------	दिनेश मरोठी, डॉ. अलोक छाजेड़
3.	मंड्या	साध्वी संयमलता जी -	जितेंद्र घोषल, विक्रम दुगड़, अरविन्द बैद
4.	दक्षिण मुंबई -	-------	अशोक बरलोटा
5.	राजाजीनगर	-------	राजेश देरासरिया, सतीश पोरवाड़ एवं रनीत कोठारी
6.	अमराईवाड़ी-ओढव	साध्वी काव्यलताजी	दिनेश टुकलिया, पंकज डांगी
7.	गोरेगांव (मुंबई)	-------	सुरेश ओस्तवाल, अशोक चौधरी
8.	हुबली	-------	केसरीचंद गोलछा, खुशाल वडेरा
9.	कांदिवली-	साध्वी मंगलप्रज्ञाजी	शांतिलाल कोठारी, सौरभ दुधेरिया
10.	फरीदाबाद	-------	भरत बेगवानी, जितेंद्र लूनिया
11.	हिरियूर	साध्वी पावनप्रभाजी	तेजराज चौपड़ा, नरेश तातेड़
12.	लिलुआ	-------	मनीष डागा
13.	गंगाशहर	-------	पवन छाजेड, पीयूष लूणीया, भरत गोलछा, देवेंद्र डागा
14.	सैंथिया	-------	प्रकाश सुराणा
15.	पाली	मुनि सुमति कुमार जी	सज्जनराज बांठिया एवं बसंतकुमार सोनी मंडिया
16.	भायंदर	साध्वी पुण्ययशा जी	भगवती भंडारी, परेश भंडारी, निर्मल जैन
17.	अहमदाबाद	मुनि मुनिसुव्रत कुमार जी एवं डॉ. मुनि मदन कुमारजी जी	डालिमचंद नौलखा, विक्रम दूगड़, नानालाल कोठारी, अरुण बैद, आनंद बोथरा, प्रकाश धींग, बाबूलाल चोपड़ा

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

ज्ञानशाला से व्यक्तित्व का होता है निर्माण

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा निर्देशित बृहद कोलकाता दक्षिण बंगाल आंचलिक ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर कार्यशाला- 2024 का सफल आयोजन प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक प्राध्यापक निर्मल नौलखा थे।

कार्यशाला में कुल 83 प्रशिक्षिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यशाला में उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- जीवन में ज्ञान का बहुत बड़ा महत्त्व है। बच्चों में ज्ञान विकास एवं संस्कार निर्माण का माध्यम बनती है- ज्ञानशाला। गुरुदेव तुलसी का महत्वपूर्ण अवदान है- ज्ञानशाला। ज्ञानशाला सद्गुणों की खान है। ज्ञानशाला से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। ज्ञानशाला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है- प्रशिक्षिकाएं। प्रशिक्षिकाएं निःस्वार्थ भाव से धर्मसंघ को अपनी सेवा दे रही है। वे निरवद्य सेवा कर अपूर्व निर्जरा कर रही हैं। वे अपने दायित्व का निर्वहन सम्यक् प्रकार से करती रहें जिससे ज्ञानशालाओं का और अधिक विकास होता रहे।

वरिष्ठ उपासक निर्मल नौलखा ने कहा- व्यक्ति सफलता चाहता है परंतु उसे सफलता मिल नहीं पाती, क्योंकि सफलता के तीन बाधक तत्व हैं- अज्ञान, प्रमाद और कषाय। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं इन तीन बाधक तत्वों को दूर करें। ज्ञान का विकास करें, प्रमाद छोड़े और अपने कषाय पर नियंत्रण रखें, जिससे प्रशिक्षिकाएं और अधिक सफलता को प्राप्त कर सकती हैं। उपासक नौलखा ने द्विदिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षिकाओं को सुन्दर ढंग से प्रशिक्षण प्रदान किया। मंगलाचरण ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने किया। स्वागत भाषण दक्षिण हावड़ा सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने किया।

आंचलिक संयोजिका डॉ. प्रेमलता चौरडिया ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार हेमलता बेगवानी ने किया। दोनों दिन प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। जिनमें प्रथम मंजु दुगड़ एवं सरोज दुगड़ दितीय चन्द्रकला कोचर, ममता जैन व तृतीय शांति धाड़ेवाल रही। कार्यशाला को सफल बनाने में दक्षिण हावड़ा सभा, आंचलिक समिति सदस्य संजय पारख, मनीषा भंसाली, हेमलता बेगवानी एवं विनिता पुगलिया आदि प्रशिक्षिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

कार्यशाला ने बच्चों में संस्कारों की जड़े मजबूत की

मदुरै।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में हरण दिवूभाई इंद्रमल जैन मैट्रिक स्कूल में आयोजित कार्यशाला ने बच्चों में सकारात्मक मूल्य का संचार किया।

अभातेममं के निर्देशानुसार आयोजित इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों में माता-पिता एवं बड़ों का सम्मान, सत्य एवं ईमानदारी, पहले तोलो फिर बोलो जैसे मूल्यों को विकसित करना था। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व महाप्राण ध्वनि के साथ हुई।

मंडल अध्यक्ष लता कोठारी एवं अनीता चोपड़ा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रही। उन्होंने बच्चों को समझाया कि बड़ों का सम्मान करना न केवल एक परंपरा है बल्कि एक व्यक्ति के चरित्र का भी दर्पण होता है। सत्य और ईमानदारी का साथ हमें अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा देता है। किसी भी कार्य को शुरु करने से पहले उसके सभी पहलुओं और तथ्यों को समझ लेना चाहिए।

बच्चों को कहानियों और उदाहरणों के माध्यम से इन मूल्यों को समझाया गया। कार्यशाला में बच्चों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया और उन्होंने इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प किया।

बबीता लोढ़ा और पिंकी भंसाली ने कार्यशाला में सक्रिय सहयोग दिया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुनीता कोठारी ने किया।

'उत्तम ज्ञानशाला' का मिला अलंकरण

राजाराजेश्वरी नगर, बेंगलुरु।

तेरापंथ सभा, बेंगलुरू के तत्वावधान में संचालित 'राजाराजेश्वरी नगर, ज्ञानशाला' को संस्था शिरोमणि श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा संचालित ज्ञानशालाओं में अखिल भारतीय स्तर पर 'उत्तम ज्ञानशाला–2022' के सम्मान से सम्मानित किया गया।

सूरत में आयोजित राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन व दीक्षांत समारोह में परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में ज्ञानशाला संयोजिका प्रिया छाजेड़ ने पुरस्कार ग्रहण किया। प्रिया छाजेड़ पिछले 13 वर्षों से ज्ञानशाला का संचालन बड़ी कुशलता एवं मनोयोगपूर्वक कर रही है। उन्होंने कहा इस उपलब्धि में हमारी सभी प्रशिक्षिका बहनों एवं प्रभारी विकास दुगड़ का योगदान रहा है।

विशेष रूप से स्व संपतदेवी बोथरा का अहम् योगदान रहा जिन्होंने हमारे क्षेत्र में ज्ञानशाला आरम्भ करवाई एवं इस जिम्मेवारी हेतु मुझ पर विश्वास किया। वर्तमान में लगभग 75 बच्चे ज्ञानशाला के माध्यम से लाभान्वित हो रहे हैं। तेरापंथ सभा, बेंगलुरू के तत्वावधान में आंचलिक संयोजक माणकचंद संचेती एवं स्थानीय संयोजिका नीता गादिया का हमें पूरा सहयोग मिलता है एवं पूरे बेंगलुरू में उपनगरीय ज्ञानशालाएं सुचारू रूप से चल रही हैं।

तेरापंथी सभा राजाराजेश्वरी नगर के अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने कहा कि आज के इस भौतिक युग में बच्चों में संस्कार सिंचन का कार्य ज्ञानशाला के माध्यम से किया जा रहा है।

विशेषताओं से प्रेरणा प्राप्त आध्यात्मिकता की ओर बढ़ें

गुवाहाटी।

मुनि प्रशांत कुमारजी के सान्निध्य में मुमुक्षु भीखमचंद नखत का मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा - मुमुक्षु भीखमचंद नखत उपस्थित हैं, सभी साधु-साध्वियों के साथ प्रायः श्रावक समाज भी इनसे परिचित हैं। वर्षों से तीनों आचार्यों की सेवा करते आए हैं। लगातार 19 वर्षों से बारह महीने की सेवा करके जीवन गुरु चरणों में समर्पित कर दिया है। अणुविभा के अध्यक्ष पद का दायित्व भी जागरुकता से निभाया। जीवन को तप-त्याग, संयम-वैराग्य भाव से भावित रखना, ये इनका विशिष्ट गुण है।

वर्तमान में पूज्य प्रवर द्वारा साधु प्रतिक्रमण का आदेश प्राप्त करने के पश्चात धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों के दर्शन कर विपुल पुण्य का संचय किया है। जीवन की अनेक विशेषताओं को देखकर गुरु कृपा प्राप्त की। ऐसे व्यक्ति से प्रेरणा मिलती है। इनसे प्रेरणा प्राप्त कर जीवन में सभी को आध्यात्मिकता की ओर बढ़ना चाहिए।

मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा- तेरापंथ की दीक्षा का अर्थ है अपने अहंकार और ममकार का विसर्जन। गुरु के प्रति समर्पित रहने वाला ही सिद्धि को प्राप्त करता है। साधु से सिद्ध की यात्रा हम सबको करनी है। एक विरल व्यक्तित्व ने वर्षों तक आचार्यों की निरन्तर सेवा में रहकर गुरु कृपा प्राप्त की है। गृहस्थ जीवन में इस प्रकार की धर्मसंघ की सेवा में आध्यात्मिकता के साथ सामाजिक दायित्व को निभाया, अब पूर्णतः आध्यात्मिक जीवन की ओर गतिमान हैं। मुमुक्षु नखत ने कहा- पूर्वाचार्यों से समय-समय पर दीक्षा की भावना व्यक्त करता रहा। प्रतिदिन मुझे दीक्षा लेनी है यह जपाराधना का भी क्रम बना रहा। भीतरी इच्छा और गुरु कृपा से संयम रत्न की प्राप्ति हो रही है। तीनों ही आचार्यों की परम कृपा मिली, सदैव आभारी रहूंगा। सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, तेरापंथ युवक परिषद् मंत्री पंकज सेठिया, अणुव्रत समिति मंत्री संजय चौरड़िया एवं रंजना बरड़िया ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। संघीय संस्थाओं द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया।

संक्षिप्त खबर

खुशियों की दीपावली, अनासक्ति भावना का विकास

नवरंगपुर। अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नवरंगपुर द्वारा जानकी नगर में गरीब परिवारों के साथ दीपावली के उपलक्ष में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था खुशियों की दीपावल - अनासक्त भावना का विकास।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंडल की बहनों ने उपस्थित जनता को पर्यावरण को साफ सुथरा रखने की प्रेरणा दी। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सन्देश - नैतिकता और नशामुक्ति के बारे में भी बताया गया। जरूरतमंद लोगों को आवश्यकता अनुसार सामग्री वितरित की गई।

खुशियों की दीपावली कार्यशाला

कांटाबांजी। अभातेममं के निर्देशानुसार स्थानीय तेरापंथ भवन में रंगोली प्रतियोगिता रखी गई। अनासक्त भावना और स्वक्छता प्रतियोगिता के निर्णायक शीतल अग्रवाल रही। उनका सम्मान महिला मण्डल अध्यक्षा आशा जैन ने किया। प्रतियोगिता के विजेता प्रथम ममता जैन, द्वितीय ज्योति हीरा जैन, तृतीय नैना जैन रहे। सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया एवं समस्त प्रतिभागियों को भी सांत्वना पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम का संचालन महिला मण्डल मंत्री रितु जैन ने किया।

सात दिवसीय ज्ञानशाला गुरुदर्शन यात्रा का आयोजन

चेन्नई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में सात दिवसीय ज्ञानशाला गुरुदर्शन यात्रा का आयोजन किया गया। मुख्य प्रवचन पंडाल में नयनाभिराम रैली के रूप में प्रवेश और सभाध्यक्ष अशोक खतंग के वक्तव्य के पश्चात ज्ञानार्थियों और प्रशिक्षकों ने साध्वी गवेषणाश्रीजी द्वारा प्रदत्त सामूहिक गीत की प्रस्तुति का अनमोल अवसर प्राप्त किया। परम श्रद्धेय गुरुदेव ने चेन्नई ज्ञानशाला के उत्तरोत्तर विकास के लिए आशीर्वाद प्रदान करते हुए प्रशिक्षकों को अपने दायित्व के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी। पूज्यवर ने चेन्नई ज्ञानशाला को सेवा का विशेष अवसर प्रदान करते हुए असीम कृपा करवाई। सभा मंत्री गजेंद्र खाँटेड के संचालन में, अध्यक्ष अशोक खतंग और यात्रा प्रायोजक प्यारेलाल पितलिया ने चेन्नई ज्ञानशाला की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए गुरुदेव की अनंत कृपा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। ज्ञानार्थियों के साथ सीधा संवाद करते हुए पूज्यवर ने उनकी कई जिज्ञासाओं का समाधान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री ने सेवा के दौरान सहज संवाद में 'BEST' शब्द का प्रेरणादायक विश्लेषण प्रस्तुत किया। मुख्यमुनि प्रवर और साध्वीवर्याजी ने विशेष प्रेरणा में अच्छा श्रावक बनने और अधिक से अधिक मुमुक्षु तैयार करने पर जोर दिया। ज्ञानशाला पर्यवेक्षक मुनि उदितकुमारजी ने दो सत्रों में ज्ञानार्थियों को प्रेरणा दी और प्रशिक्षकों को विभिन्न बिंदुओं पर मार्गदर्शन प्रदान किया। मुनिश्री ने चेन्नई ज्ञानशाला विभाग को मुनि हिमांशुकुमारजी से प्रेरणा और मार्गदर्शन लेने का सुझाव दिया।

यात्रा के दौरान सभी प्रतिभागियों को आधुनिक तकनीक से सुसज्जित ज्ञान कुंज का अवलोकन और धार्मिक फिल्म देखने का अवसर मिला। प्रतिदिन गुरुचरण स्पर्श का सौभाग्य, साधु-साध्वियों के दर्शन, सेवा, उपासना और रेल यात्रा-प्रवास की मधुर स्मृतियों के साथ यह यात्रा सानंद चेन्नई पहुंचने के साथ संपन्न हुई।

इस संघ में 115 ज्ञानार्थी, 55 प्रशिक्षक और 10 कार्यकर्ताओं सहित कुल 180 सदस्य सम्मिलित हुए। संयोजक मनोज डुंगरवाल ने अपनी टीम की ओर से सभाध्यक्ष, यात्रा प्रायोजक, ज्ञानशाला प्रशिक्षकों, कार्यकर्ताओं और ज्ञानार्थियों को उनके सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। संयोजकीय टीम में हेमंत मालू, कमल सामसुखा, कमल आच्छा, ज्ञानशाला प्रभारी राजेश सांड, सह प्रभारी अनिल बोथरा, सुरेश तातेड़, देवेंद्र सुराणा, दीपक श्रीश्रीमाल, पुखराज पारख, हरीश आच्छा, विकास छाजेड़, पवन मांडोत, नरेंद्र भंडारी का विशेष सहयोग रहा।

सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान

अहमदाबाद।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी मधुस्मिताजी के सान्निध्य में सम्पूर्ण अहमदाबाद स्तरीय सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान का आयोजन पश्चिम सभा भवन में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। महिला मंडल की बहनों ने भिक्षु अष्टकम द्वारा मंगलाचरण किया। पश्चिम सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने स्वागत वक्तव्य दिया। साध्वी काव्यलता जी भी अमराई वाड़ी से 12 किमी का विहार कर पहुचें। सभी साध्वियों ने भी आयंबिल तप किया। साध्वी सहजयशा जी ने नवपद का सामूहिक जाप करवाया। साध्वीवृंद ने साध्वी मधुस्मिताजी द्वारा रचित गीत का सामूहिक संगान किया।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा साध्वी मधुस्मिताजी तप द्वारा स्वयं तो तृप्त हुए ही, साथ में पूरे अहमदाबाद को भी तृप्त कर दिया। आपने कहा कि यह आयोजन निर्जरा का, आत्मा का आयोजन है। साध्वी मधुस्मिताजी ने तप का महत्व समझाते हुए कहा कि तप के 12 प्रकारों में ऊनोदरी तप में आयंबिल सबसे कठिन तप है। इसमें स्वाद विजय की साधना होती है जो हमारे स्वास्थ्य लाभ में सहभागी बनती है। आहार संयम से क्रोध में कमी आती है, चित्त में प्रसन्नता आती है, स्वास्थ्य लाभ से दीर्घायु को प्राप्त होते हैं। लगभग 500 श्रावक-श्राविकाओं ने आयम्बिल अनुष्ठान में भाग लिया। श्रावक छीत्तरमल मेहता का इस आयोजन में सराहनीय श्रम लगा। कार्यक्रम का सुनियोजित संचालन संयोजिका चांदबाई छाजेड़ ने किया। आभार ज्ञापन राजेंद्र बोथरा ने किया।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह समायोजित

चेन्नई।

मुनि हिमांशुकुमार जी के सान्निध्य में, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, चेन्नई द्वारा 10वीं और 12वीं कक्षा के मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह तेरापंथ भवन, साहूकारपेट, चेन्नई में आयोजित किया गया।

नमस्कार महामंत्र के साथ शुरू हुए कार्यक्रम में मुनि हिमांशुकुमारजी और मुनि हेमन्तकुमारजी ने 'मैनेज योर टैलेंट' विषय पर ज्ञानवर्धक पाथेय प्रदान किया। मेधावी छात्र सम्मान समारोह के संयोजक सुनील बाफना ने कार्यक्रम का संचालन किया और टीपीएफ की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

टीपीएफ अध्यक्षा बबीता चोपड़ा ने छात्रों, अभिभावकों और दर्शकों का स्वागत किया और उन्हें आगे बढ़ने और समाज में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया। 35 छात्रों, उनके अभिभावकों, टीपीएफ सदस्यों और समाज के गणमान्य व्यक्तित्वों की उपस्थिति में विभिन्न शैक्षणिक विषयों में उत्कृष्टता प्राप्त विद्यार्थियों को पांच पदक श्रेणियों से सम्मानित किया गया।

छात्रों और अभिभावकों ने टीपीएफ के प्रयासों और समारोह में शिक्षा और सामुदायिक समर्थन मूल्यों के सकारात्मक माहौल की सराहना की। धन्यवाद ज्ञापन सुनील बाफना ने किया।

मुनिश्री के मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

पंच दिवसीय संस्कार निर्माण कार्यशाला का हुआ आयोजन

दक्षिण हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य तथा दक्षिण हावड़ा तेरापंथ सभा के तत्वावधान में पंच दिवसीय संस्कार निर्माण कार्यशाला का आयोजन प्रेक्षा विहार में हुआ। जिसमें पांच दिनों में 113 बालक-बालिकाओं ने उत्साह व निष्ठा के साथ भाग लिया।

समापन समारोह में मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा प्रत्येक व्यक्ति विकास चाहता है। विकास के मूल सूत्र हैं- विनय और विवेक। आकाश में उड़न भरने के लिए पक्षी को पंखों की आवश्यकता रहती है, वैसे ही बच्चों को विकास के लिए विवेक रुपी पंखों की जरूरत रहती है।

आज व्यक्ति सद्संस्कार, सद्शिक्षा से दूर होता जा रहा है। हालत ऐसे है कि जन्म हॉस्पिटल में, बचपन हॉस्टल में, यौवन होटल में, अंत में रही-सही जिन्दगी भी हास्पिटल में पूरी हो जाती है। मां बाप का नैतिक दायित्व है कि वे बच्चों को सुसंस्कार दे ताकि उनका जीवन समुन्नत हो। बच्चों को संस्कारी बनाना घर-परिवार को संस्कारी बनाना है। ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों का अच्छा विकास हो सकता है।

कार्यशाला में बच्चों को मुनि जिनेशकुमारजी के अतिरिक डॉ. प्रेमलता चौरड़िया, संजय पारख, सुप्रिया श्यामसुखा, डॉ. लावण्या कोठारी, उपासक सुशील बाफणा ने विविध विषयों पर प्रशिक्षण दिया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने बच्चों को जैन विद्या का अध्ययन व कंठस्थ ज्ञान कराया।

मुनि परमानंदजी ने विचार रखे। ज्ञानशाला व्यवस्थापक प्रदीप पुगलिया, राजेन्द्र चौपडा, संजय पारख, हेमलता बैगानी ने कार्यशाला में ज्ञान वर्धक व रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। जिसमें प्रथम, दितीय, तृतीय आने वाले प्रतियोगियों को उत्साह वर्धन हेतु सभा के द्वारा पुरस्कृत किया गया। तेरापंथ महिला मंडला की अध्यक्षा चन्द्रकांता पुगलिया ने प्रतियोगिता के बारे में बताते हुए परिणामों की घोषणा की। आभार तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष बजरंग डागा ने किया।

संक्षिप्त खबर

संतो के मिलन से बढ़ता है आत्मिक उल्लास

रायपुर। टैगोर नगर स्थित पटवा भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी के शिष्य मुनि सुधाकर जी व मुनि नरेशकुमार जी से स्थानकवासी संत तपस्वी शीतल मुनि जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। यह आध्यात्मिक मिलन सबके लिए मैत्री और प्रमोद भावना का कारक बना। मुनि सुधाकरजी ने शीतल मुनि जी का स्वागत करते हुए कहा- संतों का मिलन आध्यात्मिक उल्लास देता है, यह आध्यात्मिक मिलन आध्यात्मिक शक्ति का संचार करता है। हमें सभी परंपराओं के प्रति उदारता का भाव रखना चाहिए। हमारे मन में सब के प्रति गुणग्राहकता का भाव होना चाहिए। मुनि सुधाकर जी ने आगे कहा- शीतल मुनि जी तपस्वी संत हैं, आपकी साधना गहरी है। आज आपके उपवास और मौन होते हुए भी आप पटवा भवन आए यह आपकी उदारता का परिचय है। इस अवसर पर जैन समाज के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन

पाली। तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा तेरापंथ भवन में मुनि सुमतिकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में भक्तामर अनुष्ठान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि सुमतिकुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। इसके पश्चात भगवान ऋषभदेव के मंत्र का जाप करवाया गया। मुनिश्री ने बताया कि भक्तामर स्तोत्र का श्रद्धा के साथ अनुष्ठान करने से भौतिक और आध्यात्मिक दोनों लाभ प्राप्त होते हैं। मुनि देवार्यकुमार जी ने भक्तामर स्तोत्र के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आचार्य मानतुंग द्वारा इसकी रचना के इतिहास का वर्णन किया। अनुष्ठान में भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक जाप हुआ, जिसमें 81 जोड़े और लगभग 50 अन्य व्यक्ति सहभागी बने।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

'गुड लक, गुड लाइफ' विषयक कार्यशाला का आयोजन

माधावरम्, चेन्नई।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में 'गुड लक, गुड लाइफ' विषयक कार्यशाला का आयोजन जैन तेरापंथ नगर, माधावरम्, चेन्नई में हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि नवग्रहों का शुभ या अशुभ प्रभाव व्यक्ति पर समान रूप से हर अवस्था में पड़ता है और ग्रह की चालों के अनुसार उसे विवश होकर चलना पड़ता है। कोई भी इस प्रभाव से बच नहीं सकता।

हमारे अच्छे भाग्य के निर्माण का तात्पर्य है, अच्छी जिंदगी की सजावट। जीवन में सुख दुःख के कारक नवग्रह हैं। ग्रहों की पीड़ा एवं उनके अशुभ प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए नमस्कार महामंत्र का जप काफी लाभदायक और कल्याणकारी है। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि जब शिशु की नाभि का छिन्दन अपनी माँ से अलग हो जाता है, तब उसका सीधा संबंध पृथ्वी और प्रत्येक ग्रहों से हो जाता है। साध्वी दक्षप्रभाजी ने मधुर गीत प्रस्तुत किया।

मुख्य वक्ता मानव सिंघवी ने कहा कि हमारा शरीर पंच तत्वों से बना है, और यही तत्व ग्रहों, राशियों और नक्षत्रों में विद्यमान हैं। उन्होंने इनके विभिन्न केन्द्रों पर प्रभाव की जानकारी देते हुए नवग्रह आधारित तीर्थकरों का जप कराया। मुख्य वक्ता को प्रबंधन्यासी घीसुलाल बोहरा, रमेश परमार, माणकचंद राँका, तेजराज पूनमिया ने सम्मानित किया। संचालन सुरेश रांका ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रवीण सुराणा ने दिया।

प्रकाश पर्व कार्यशाला

राउरकेला।

अभातेममं निर्देशित प्रकाश पर्व कार्यशाला तेरापंथ भवन राउरकेला में आयोजित की गयी। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

अध्यक्ष तरुलता जैन ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए दिवाली और अनासक्ति के साथ गहरे भाव को उदाहरण के साथ व्यक्त किया और सभी को अर्जन के साथ विसर्जन के लिए प्रेरित किया। सुरभि बोथरा ने आत्मा के विमोचन पर अपने भाव व्यक्त किये एवं दीपक के साथ क्षमा का संकल्प दिलाया। स्नेहलता चोरडिया ने दिवाली पर सुंदर कविता सुनाई। कनक डोशी, मनीषा डोशी, कनक दुगड़, पूजा दुगड़ एवं कन्या मंडल ने आसक्ति और अनासक्ति पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया एवं अंत में सुरभि बोथरा और देवयानी जैन द्वारा रोचक प्रतियोगिता आयोजित की गयी। अनासक्ति विषय पर रंगोली के लिए नेहा जैन तथा कन्या मंडल से काम्या कोठारी और काव्या कोठारी को भी पुरस्कृत किया गया।

मंच संचालन पूजा दुगड़ और प्रेरणा बुच्चा ने किया एवं आभार ज्ञापन मीनाक्षी बोथरा ने किया।

संक्षिप्त खबर

'मुणिन्द मोरा' गीत व्यक्तित्व विकास का है फार्मूला

उदयपुर। डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में मुणिन्द मोरा ढाल अनुष्ठान का समायोजन हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रीमद् जयाचार्य तेरापंथ शासन के गौरवशाली, प्रभावशाली, प्रज्ञा सम्पन्न आचार्य थे। वे श्रुत के महासागर थे, अध्यात्म के महासूर्य थे, मंत्रों के विशेष जाता थे। उन्होंने विशिष्ट गीतों की रचना की जिसमें मुणिन्द मोरा गीत खास है। इस गीत में व्यक्तित्व बदलाव का फार्मूला है। यह मंत्र से आपूरित स्तवन आयोजन, आंदोलन,अभियान और प्रदर्शन का नहीं अपितु अन्तर्मुखी चेतना के जागरण का महाघोष है। कार्तिक शुक्ला दशमी के दिन इस गीत की रचना बीदासर में हुई थी। इस गीत के संगान से अंगारों का उपद्रव शांत हो गया। इस ढाल के स्तवन से, सकारात्मक सोच से विजय का ध्वज फहराएं। व्यवहार में विनम्रता की पहचान बनाएं।

संस्कृति को सुरक्षित रखने वाली विशिष्ट शक्ति है महिला

दक्षिण हावड़ा।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में प्रबुद्ध महिला सेमिनार का आयोजन शरत सदन ऑडिटोरियम में तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा द्वारा आयोजित किया गया।

उपस्थित प्रबुद्ध जन को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- किसी भी सभ्य, शिष्ट व स्वस्थ समाज के निर्माण में व्यक्ति के संस्कारों का बहुत बड़ा योगदान रहता है। व्यक्ति के संस्कार निर्माण में महिला की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि संस्कार निर्माण के माध्यम से महिला समाज निर्माण व राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। दुनिया को संवारने, संजोने वाली व संस्कृति को सुरक्षित रखने वाली एक विशिष्ट शक्ति का नाम महिला है। भारत की नारी तप, त्याग तथा शक्ति और संयम की जीवंत प्रतिमा है।

मुनिश्री ने आगे कहा - महिला की जीवन शैली में आचार में दृढ़ता, विचारों में सकारात्मकता, संस्कार में सृजनता व व्यवहार में मधुरता का समावेश होना चाहिए। महिला जितनी संस्कारी होगी परिवार व समाज उतना ही शक्तिशाली होगा। मुनि परमानंदजी ने कहा- आधुनिकता से तात्पर्य उस व्यक्तित्व से है जिसमें शिक्षा, संस्कार, कार्य कौशल व संस्कृति का समावेश हो। महिलाओं की प्रबुद्धता घर-परिवार में खुशहाली लाये यह अपेक्षा है। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि अ.भा.ते.म.मं. की संगठन मंत्री रमण पटावरी ने कहा- नारी सृजन की शक्ति व प्रेरणापुंज है। शिक्षायतन कॉलेज की प्रोफेसर प्रीति सिंधी ने कहा- नारी अपना निर्माण स्वयं करें। सबको साथ लेकर चलने की अद्भुत शक्ति नारी में होती है।

मुख्य वक्ता अ.भा.ते.म.मं. ट्रस्टी सूरज बरडिया ने कहा- डिग्रियां तो बहुत है पर खुशियाँ कम होती जा रही है, मकान तो बहुत हैं, पर रौनक खत्म होती जा रही है, इसलिए आज जरूरत है बेटियों व बच्चों को संस्कारित बनाने की। प्रेरक वक्ता पूजा रितु बोथरा ने कहा- महिलाओं की जीवन शैली संयम प्रधान जीवन शैली होनी चाहिए। महिलाओं में सकारात्मक सोच, अनुशासन का विकास व सशक्तता का होना बहुत जरूरी है। बालिका मायरा चिंडालिया ने नारी शक्ति पर कविता व प्रसंग सुनाकर सबको भाव विभोर कर दिया। तेरापंथ महिला मंडल साउथ हावड़ा की बहनों ने सुमधुर गीत का संगान व युवतियों ने दर्पण शब्द पर अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेमम की अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया ने दिया। साउथ हावडा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने शुभकामना देते हुए अपने विचार व्यक्त किये। गायिका अंशु सेठिया ने सुमधुर गीतों का संगान किया। आभार ज्ञापन मंत्री रेखा बैंगानी ने व संचालन उपाध्यक्षा लक्ष्मी गिड़िया व नम्रता नाहटा ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर अ.भा. ते. म.मं की पूर्व अध्यक्षा, नारी रत्न ताराबाई सुराणा, मुख्य अतिथि सिविल कोर्ट कोलकाता जज पूनम सिंघी, अनुपमा नाहटा, संगीता बाफणा, कन्या मंडल प्रभारी सोनम बागरेचा की गरिमामयी उपस्थित रही। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा अतिथियों, प्रायोजकों का सम्मान किया गया किया गया।

कार्यक्रम में विभिन्न सस्थाओं के पदाधिकारी व सदस्यों, महिला शक्ति व श्रद्धालुजन ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

दंपत्ति कार्यशाला में सीखे खुशहाल जीवन के सूत्र

राजसमन्द।

साध्वी लब्धियशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में दंपत्ति कार्यशाला का आयोजन भिक्षु बोधि स्थल प्रांगण में रखा गया।

साध्वी लब्धियशा जी ने कहा- सुखी जीवन का राज है - कहना सीखो, सहना सीखो, रहना सीखो। ये तीन सूत्र जीवन में उतर गए तो जीवन खुशहाल बन जाएगा। सम्बन्धों को अच्छा रखने की सबसे बड़ी कला है बोलने की कला। वाणी से ही मित्र और शत्रु बनते हैं। प्रसन्नता से रहना भी एक कला है। आनन्द व उत्साह से भरी हमारी मुख मुद्रा ही परिवार की शांति का आधार है। तीसरी कला है सहना, जो सहता है वह रहता है। आज की सबसे बड़ी समस्या

सम्बन्धों को अच्छा रखने की सबसे बड़ी कला है बोलने की कला। वाणी से ही मित्र और शत्रु बनते हैं।

है- पेशेंस नहीं है। इसी के कारण तलाक, आत्महत्या, डिप्रेशन, हार्ट अटेक, डायबिटिज जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पति और पत्नी यदि एक दूसरे को सहन करना सीख लें तो परिवार स्वर्ग बन जाए।

तेयुप अध्यक्ष विकास मादरेचा ने सभी का स्वागत किया। साध्वी कौशलप्रभा जी ने सभी दम्पत्तियों को विविध राग रागिनियों में पहेलियों व प्रश्नों के माध्यम से रोचक राउण्ड करवाया। दूसरा राउण्ड कपल सॉन्ग का और तीसरा राउण्ड चित्र पहचानो प्रतियोगिता का रहा। इनमें प्रथम स्थान प्राप्त किया - अक्षय शिल्पा कोठारी, मनीष रितु धोका, मनोज समता कोठारी।

द्वितीय स्थान पर रहे - अविलेश प्रतिभा कावड़िया, एवं दीपक टीना चपलोत। कार्यशाला में 40 दम्पत्तियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। आभार ज्ञापन पूर्व तेयुप अध्यक्ष भूपेश धोका ने किया। तेयुप द्वारा सभी संभागियों को पुरस्कृत किया।

कार्यशाला में तेयुप मंत्री प्रमोद कावड़िया का सक्रिय सहयोग रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी कौशलप्रभा जी ने किया।

खुशियों की दीपावली कार्यशाला का हुआ आयोजन

कांदिवली, मुंबई।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित खुशियों की दीपावली कार्यशाला का आयोजन कांदिवली-मालाड महिला मंडल ने साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन कांदिवली में किया।

साध्वी अतुलयशा जी के नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत की गई। कांदिवली-मालाड की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। तत्पश्चात् कांदिवली महिला मंडल अध्यक्षा विभा श्रीश्रीमाल ने सभी का स्वागत करते हुए आत्मा के विमोचन विषय पर विचार व्यक्त करके अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ते हुए दीपावली मनाने की शुभकामनाएं प्रेषित की।

साध्वी अतुलयशा जी ने भगवान महावीर की आराधना करते हुए सामायिक के साथ सुव्यवस्थित तरीके से अनुष्ठान संपादित करवाया। साध्वी डॉ.राजुलप्रभा जी ने कहा कि भगवान महावीर की आत्मा के विमोचन से ही दीपावली पर्व की शुरुआत हुई और हमें भी कर्मों का बंधन कैसे कम हो, उस पर ध्यान देकर हमारी आत्मा के विमोचन की और अग्रसर होना है।

अ.भा.ते.म.म. से महाराष्ट्र प्रभारी संगीता चपलोत ने छोटे-छोटे संकल्पों से आध्यात्मिक दिवाली मनाने पर अपने विचार रखे। कांदिवली महिला मंडल द्वारा ज्ञान चेतना प्रश्नोत्तरी में तारा कुमठ को पुरुस्कृत किया गया। रंगोली प्रतियोगिता में कांदिवली से प्रथम स्थान कोमल कोठारी, द्वितीय स्थान चेतना दुग्गड़, तृतीय स्थान तारा धाकड़ एवं सारिका कोठारी ने प्राप्त किया।

मलाड से रेशमा सिंघवी और सोनिका बाफना एवं कन्या मंडल से जूही कोठारी और कृषा कोठारी प्रतियोगिता में विजयी रही। सभी विजेता बहनों को पुरुस्कृत किया गया।

रंगोली प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में तत्व प्रचेता, उपासिका निर्मला नौलखा एवं रंगोली एक्सपर्ट मनीषा राठौड़ रहे। सभी बहनों ने दीपक जलाकर किसी एक व्यक्ति को क्षमा करने का संकल्प लिया।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम बाहरी स्वच्छता में इतने उलझ गए हैं कि आंतरिक स्वच्छता की ओर हम प्रमाद कर रहे हैं। अब हमें अंधकार से प्रकाश की ओर प्रस्थान करते हुए ज्यादा से ज्यादा आत्म विमोचन की ओर ध्यान देने के लिए अनासक्ति की भावना को बढ़ाना है, विसर्जन की ओर अग्रसर होकर खुशियों की दीपावली मनानी है।

डोनेशन ड्राइव के तहत बहनों ने विसर्जन किया। आभार ज्ञापन मालाड अध्यक्षा कुसुम कोठारी ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन कांदिवली मंत्री नीतू दुगड़ एवं मालाड मंत्री मीना बाफना ने किया। लगभग 60 बहनों की उपस्थिति रही।

पृष्ठ 19 का शेष

अहिंसा, संयम और तप...

चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा ने पूज्यवर व सभी चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। सभी कार्यकर्ताओं, संस्थाओं और सूरत समाज के प्रत्यक्ष और परोक्ष सहयोग के प्रति आभार व प्रमोद भावना अभिव्यक्त करते हुए चातुर्मास काल की उपलब्धियों को भी रेखांकित किया।

कार्यक्रम के मध्य खिला मध्य प्रदेश का भाग्य

भगवान महावीर, परम पूज्य आचार्य भिक्षु और पूर्वाचार्यों का स्मरण कर पूज्यवर ने सन 2031 में कम से कम 101 दिनों का प्रवास मध्यप्रदेश में प्रवास करने का भाव है, उसमें भी कम से कम 60 रात्रियों का प्रवास इन्दौर में करने का भाव है।

जिला शिक्षा अधिकारी भागीरथ सिंह परमार ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कन्यामंडल, ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षिकाओं, महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, किशोर मंडल ने मंगल भावना स्वरुप अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। सुरेश कोठारी, गौतम कोठारी, संजय बोथरा ने मालवा व इन्दौर की तरफ से श्री चरणों में कृतज्ञता व्यक्त की। अणुविभा अध्यक्ष प्रताप दुगड़ ने जीवन विज्ञान दिवस पर अपनी अभिव्यक्ति दी।

प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा ने दिलीप गोठी की कृति 'आनंद की अनुभूति' पुस्तक गुरुदेव को समर्पित की। महामंत्री नानालाल राठौड़ ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पृष्ठ 20 का शेष

ज्ञान के साथ विद्यार्थियों में...

डॉ. अभिनव सक्सेना ने भारत के उच्चतम न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) के पूर्व न्यायाधीश दिनेश महेश्वरी को प्रदान किये जाने वाले डी.लिट. मानद उपाधि के प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। शिक्षा मंत्री एवं कुलपति ने न्यायाधीश दिनेश महेश्वरी को डी.लिट. की उपाधि प्रदान की। न्यायाधीश महेश्वरी ने यह उपाधि अपने गुरुजनों, परिजनों एवं सहकर्मियों को समर्पित कर विद्यार्थियों को गुरुजन के जीवन से प्रेरणा लेकर चलने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के कुलपति बच्छराज दुगड़ ने की। उन्होंने संस्थान सदस्यों को संकल्प सूत्र ग्रहण करवाए। संस्थान की छात्राओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक ने विभागाध्यक्षों को उपाधियां प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में शिक्षा मंत्री प्रधान और अन्य गणमान्य अतिथियों को विश्व विद्यालय परिवार एवं आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक ने किया। कार्यकर्म में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड एवं लोकसभा सांसद मुकेश दलाल आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

पृष्ठ 18 का शेष

वीतरागता, अहिंसा और...

आपने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ अपने आप में एक अद्भुत संघ है, हम हमेशा तेरापंथ की प्रशंसा करते रहते हैं। आपके जैसा अनुशासन सब में हो तो हमारा जैन समाज प्रगति करेगा। सूरत नगर आयुक्त (म्यूनिसिपल कमीश्नर) शालीनी अग्रवाल ने अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए कहा कि इस चतुर्मास से सूरत शहर को धर्म और अध्यात्म की नगरी के रूप में पहचान मिली है। मंगलभावना के क्रम गतिमान रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

विचार को बदलना सीखें

यदि हम विचार को ही पकड़ेंगे तो समस्या का समाधान नहीं हो सकेगा। अध्यात्म के आचार्यों ने इस सचाई को बहुत पहले समझ लिया था। इसलिए उन्होंने कहा विचार पर ज्यादा बोझ मत लादो अतिरिक्त बोझ मत लादो।ज्यादा भार लाद दिया तो वह दब जायेगा टूट जायेगा कुछ मिलेगा नहीं।

जो व्यक्ति समस्या के प्रति वर्तमान के प्रति जागरूकता नहीं होता वही मुर्ख कहा जायेगा। सामाजिक और पारिवारिक जीवन में सबसे पहली आवश्यकता है जागरूकता की। आप सामाजिक जीवन जीते हैए किन्तु व्यक्तिगत जीवन भी उससे अलग नहीं है। सामाजिक जीवन के दो पहलू हैं.समाज का जीवन और व्यक्ति का जीवन।

सामजस्य समझौता और व्यवस्था.इन तीनों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण सूत्र है सहिष्णुता। यह अहिंसाएपारस्परिक सौहार्द और शान्त सहवास का आधार बनता है। समस्या यह है कि आज आदमी एक.दुसरे को सहन करना नहीं जानता। उसका दिमाग ही कुछ ऐसा बना हुआ है कि सहन करना बहुत कम जानता हैं।

हम हर बात का गलत अर्थ लगाने के आदी हो गये हैं। बात को ठीक नहीं समझते हैं या कोई बहाना बना लेते हैंए चालाकियां करते हैं। निर्माण कहां से हो? कैसे हो? मिर्माण के लिए पूरी सचाई के साथ इना बातों पर ध्यान दिया जाए, यह अपेंक्षित है- कैसे अपने संस्कारों का निर्माण करें, कैसे अपने बच्चों के संस्कार का निर्माण करें?

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

संस्कार शाला का सातवां चरण आयोजित

गुवाहाटी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल गुवाहाटी द्वारा समृद्ध राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत संस्कार शाला का सातवां चरण दिगंबर जैन विद्यालय में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व मंगलाचरण के साथ प्रारंभ हुई। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का स्वागत किया व कार्यशाला पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण करके उनके सुखद भविष्य का निर्माण करना है। विद्यालय की प्रधानाचार्य ने महिला मंडल की सभी बहनों का स्वागत किया। कोषाध्यक्ष राजश्री दुगड़ ने महाप्राण ध्वनि और उसके साथ एकाग्रता बढ़ाने के लिए बच्चों को सहज व्यायाम व योग मुद्रा का प्रयोग करवाया।

संयोजिका पूजा सुराणा ने पहले तोलो फिर बोलो का महत्व समझाते हुए वक्तव्य दिया। संयोजिका सुनीता पटवा ने कहानी के माध्यम से सच्चाई व ईमानदारी पर चलने की शिक्षा दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री ममता दुगड़ व आभार ज्ञापन सहमंत्री बबीता लुणावत ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

आत्मा के वश में रहे मन : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
12 नवम्बर, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अमृत देशना में कहा कि आयारो आगम में यह बताया गया है कि मनुष्य के मन में दुःख से मुक्त रहने की भावना हो सकती है। वह सोच सकता है कि कोई कष्ट या समस्या न आए और वह दुःखी न हो।

दुःख दो प्रकार के होते हैं— जरा और शोक। जरा - शारीरिक कठिनाइयों, जैसे वृद्धावस्था, बीमारी आदि से संबंधित होता है। शोक मानसिक दुःख है, जो विभिन्न कारणों से उत्पन्न हो सकता है। मनुष्य इन दोनों प्रकार के दुःखों से मुक्त रहना चाहता है। दुःख मुक्ति के लिए एक आध्यात्मिक उपाय बताया गया है -पुरुष ! अपनी आत्मा का संयम और अभिनिग्रह करो।

जीवन में अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों आती हैं। अनुकूलता में अधिक राग या खुशी नहीं करनी चाहिए। प्रतिकूलता में अधिक द्वेष या असंतोष नहीं होना चाहिए। चित्त का अभिनिग्रह (सयंम) कर इसे संतुलित रखना चाहिए। जब चित्त का अभ्यास संयमित हो जाता है, तो दुःख से मुक्ति संभव हो जाती है।

सबसे पहले हमें अपने चित्त को वश में करना चाहिए। मन चंचल होता है पर इसे चंचल बनाने वाले कषाय, राग-द्वेष होते हैं। इन भावों को कम या समाप्त करना जरूरी है। जैसे तालाब के पानी में अपना चेहरा देखना हो तो स्थिरता और स्वच्छता दोनों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हमारे चित्त में राग-द्वेष की तरंगें न हो, चंचलता न हो तो दुःख मुक्ति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

आध्यात्मिक साधना के माध्यम से राग-द्वेष और कषाय की वृत्तियों को नियंत्रित करना चाहिए। शास्त्रों में इसे दो श्रेणियों में बताया गया है :- उपशम श्रेणी और क्षपक श्रेणी। उपशम श्रेणी की तुलना फिटकरी से पानी में मिट्टी या गंदगी को नीचे बिठाने से की जा सकती है। वहीं क्षपक श्रेणी की तुलना मिट्टी, गंदगी को पूरी तरह पानी से अलग करने से की जा सकती है। क्षपक श्रेणी की साधना ज्यादा फलवान हो सकती है।

दूसरों को वश में करना हमारे हाथ में नहीं है, लेकिन अपने चित्त को वश में करना हमारे नियंत्रण में है। मन का गुलाम व्यक्ति दुःख के मार्ग पर होता है, लेकिन जो मन को नियंत्रित कर लेता है, वह व्यक्ति दुःख से मुक्त हो सकता है। मन नौकर है, आत्मा मालिक है, मन आत्मा के वश में रहे तो दुःख मुक्ति की बात हो सकती है।

पांडेसरा से समागत स्थानकवासी साध्वी मनीषाश्रीजी और साध्वी पूर्वाश्रीजी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। वंदना संकलेचा ने आचार्यश्री से 21 उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। मंगलभावना के क्रम में अनेकों व्यक्तियों ने अपने भाव अभिव्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

वीतरागता, अहिंसा और जैन दर्शन के विकास की हो बात : आचार्यश्री महाश्रमण

खरतरगच्छाधिपति आचार्य मणिप्रभसागर सूरीश्वरजी का युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी से हुआ आध्यात्मिक मिलन

सूरत।
13 नवम्बर, 2024

जिनशासन प्रभावक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि आयारो आगम में कहा गया है- पुरूष ! तूं सत्य का ही अनुशीलन कर। सत्य को जान लेना, यथार्थ को समझ लेना समस्या का एक समाधान हो सकता है। आत्म निग्रह, मन का संयम, चित्त का संयम करना है, तो अध्यात्म तत्व को आदमी समझ ले, फिर चित्त का निग्रह करने का प्रयास करें।

हमारी दुनिया में यथार्थ वेत्ता और यथार्थ वक्ता महान व्यक्ति हो सकते हैं। एक शब्द है- आप्त। यथार्थ को जानने और बोलने वाला 'आप्त' होता है। यथार्थ का ज्ञान ग्रन्थों को पढ़ने से एवं सुनने से हो सकता है। बिना पढ़े सुने भी भीतर से ज्ञान प्रकट होता है और यथार्थ का साक्षात्कार हो जाता है। केवल ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान होता है, उससे दुनिया का सारा ज्ञान प्राप्त हो जाता है, कुछ भी अनजान नहीं रहता।

केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए साधना जरुरी है, वीतरागता जरुरी है। जो कषाय युक्त है, या ज्यादा बोलने वाला है, वह अयथार्थ संभाषण कर सकता है। साधु के तो जीवनभर का मृषावाद का त्याग होता है। गृहस्थ भी अपने जीवन में जितना संभव हो सके झूठ न बोले।

सच्चाई बोलने से कठिनाइयां तो आ सकती है पर संकल्प दृढ़ हो तो सत्य परास्त नहीं हो सकता।

पूज्यवर ने आगे फरमाया कि कहीं-कहीं सत्य का अनुशीलन कठिन हो सकता है। संप्रदाय की मान्यता के विरुद्ध स्थापना करना भी विचारणीय बन सकता है। ऐसी स्थिति में तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं :- स्वयं का विचार, संप्रदाय की मान्यता और केवली भगवान का ज्ञान। साधु यह सोचे कि निश्चय में जो केवलियों ने प्रवेदित किया है वही सत्य है। जिनेश्वर देव ने जो प्रवेदित किया है, वहां पर साधु व संप्रदाय की मान्यता गौण है। जिनेश्वर भगवान का ज्ञान सबसे ऊपर है। दूसरी बात है कि संप्रदाय में जो बहुश्रुत हैं उनसे स्वयं के चिन्तन के बारे में विमर्श किया जा सकता है। राग द्वेष के आधार पर खंडन-मंडन न किया जाए। अनाग्रह का भाव हो, सच्चाई के प्रति निष्ठा हो तो सत्य बात का निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

मूर्तिपूजक संप्रदाय में खरतरगच्छाधिपति आचार्य मणिप्रभसागर सूरीश्वरजी के समागमन के सन्दर्भ में पूज्यप्रवर ने फ़रमाया कि जैन शासन में अनेक आम्नाय हैं। मान्यता, वेशभूषा, उपासना या सिद्धान्त का अन्तर हो सकता है पर जहां वीतरागता, अहिंसा और जैन दर्शन के विकास की बात है वहां इन बातों का उतना महत्व नहीं है।

सच्चाई और अच्छी बातों का प्रसार करने का प्रयास करें। चर्चा-वार्ता करते रहने से, मिलने से अच्छी हित की बात भी प्राप्त हो सकती है। जैन शासन का, मानव जाति का जितना हो सके, अच्छा काम होता रहे।

आचार्य मणिप्रभसागर सूरीश्वरजी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि अनेक सम्प्रदाय और परम्पराएं हैं पर सबका ध्येय और लक्ष्य एक है। 99% सिद्धान्त एक हैं, केवल 1% का अन्तर हो सकता है। पांच महाव्रतों में, नव तत्वों में, चौबीस तीर्थंकरों में, नवकार महामंत्र की साधना में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है, हमें इन 99 प्रतिशत बातों को आगे करना है।

युवाओं का मार्गदर्शन जैन संत ही कर सकते हैं। जैन संतों पर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, जैनत्व और आचार-विचारों को बचाने की जिम्मेदारी संतों पर है। संतों का मिलन अपने आप में एक प्रखर संदेश देता है कि हमार जैन समाज एक है। जीवन में मिलन और समन्वय बहुत जरूरी है तभी साधना संभव हो सकती है।

आपने खरगोश और कछुए के दृष्टान्त से समझाया कि जो सतत जागता है, चलता रहता है, वह जीत जाता है। सोया रहने वाला हार जाता है। दोनों मिलते हैं तो सारे रास्ते पार हो जाते है। जैन धर्म के सभी सम्प्रदाय भी एक दूसरे के पूरक बनने का प्रयास करें, समन्वय और सहयोग का भाव जागृत रहे तो पूरे विश्व को जैन धर्म को रास्ता बता सकते हैं।

(शेष पेज 17 पर)

अहिंसा, संयम और तप का आराधन करने वाले का कल्याण है निश्चित : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
14 नवम्बर, 2024

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के अनन्तर पट्टधर आचार्य श्री महाश्रमणजी ने ध्यान के प्रयोग के साथ शक्ति, अध्यात्म, स्वस्थता, पवित्रता, महाप्रज्ञा, विनम्रता, उपशम, ऋजुता, संतोष, समता, धर्म और भगवत्ता की भावना से स्वयं के साथ उपस्थित जनमेदिनी को भावित किया। तत्पश्चात मंगल देशना प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। मंगलकामना की जाती है, दूसरों को शुभाशंषा भी दी जा सकती है। आदमी स्वयं का भी मंगल चाहता है, मंगल के लिए प्रयास भी किया जाता है।

हमारे यहां दीक्षा दी जाती है, नवदीक्षित को ग्रास भी दिया जाता है, जिसे अध्यात्म का, अनुशासन का ओज आहार माना जाता है। इसके पीछे भी मंगल का विचार हो सकता है। मंगल की दृष्टि से मुहुर्त भी देखा जाता है। मंगलपाठ उच्चरित किया जाता है, उसमें भी मंगल का भाव हो सकता है। शास्त्र में इन सबसे ऊपर धर्म को उत्कृष्ट मंगल बताया गया है। इस श्लोक में किसी धर्म का नाम नहीं है। यहां तो अहिंसा, संयम और तप को धर्म का सार बता दिया गया है। अहिंसा, संयम व तप की साधना कोई भी करे तो मंगल ही होगा। जैसे गुड़ सबको ही मीठा लगता है, वैसे ही अहिंसा, संयम और तप का आराधन करेंगे तो कल्याण ही होगा।

जिन्होंने इनकी आराधना की है, उन भव्य आत्माओं ने मानो मोक्ष की ओर गति की है। चतुर्मास धर्म की साधना का एक विशेष अवसर होता है। आज चतुर्मास की उतरती चतुर्दशी भी आ गई है। चतुर्मास साधुचर्या का एक अंग है। हमारा सूरत में चतुर्मास हुआ है। इतनी चारित्रात्माओं (59 संत और शताधिक साध्वियां) व समणियों का प्रवास एक साथ होना बड़ी बात है। चातुर्मास के बीच में तपस्या करते-करते साध्वी धैर्यप्रभाजी तो मानो उर्ध्वगमन कर गए, यह भी इतिहास का एक विरल प्रसंग है। अब विहार की तैयारी है, विदा लेना है।

साध्वीप्रमुखाओं के कार्य को देखना है गरिमा की बात

चतुर्मास में मुख्यमुनि महावीरकुमारजी द्वारा जैन रामायण (राम यशोरसायन) का व्याख्यान चला। रत्नाधिक मुनिश्री धर्मचन्दजी तो नवमें दशक में भी पैदल विहार करते हैं। तेरापंथ के इतिहास के अंतर्गत, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी एवं साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के द्वारा, आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन वृत्त के कार्य को भी मुनिश्री का सहयोग प्राप्त है। आपके लिए यह भी एक गरिमा की बात है कि आप साध्वीप्रमुखाओं के कार्य को देखने या परामर्श देने वाले मुनि प्रवर हैं। शरीर जितना स्ववश रहे, अच्छी बात हो सकती है।

बिजी लाइफ में भी रहे चित्त की प्रसन्नता

साध्वीप्रमुखाजी भी अनेकों कार्यों में संलग्न हैं, बिजी लाइफ में भी चित्त की प्रसन्नता और शरीर की अनुकूलता रहे। यात्रा में स्वास्थ्य का ध्यान रखें। साध्वीवर्या भी स्वास्थ्य का ध्यान रखें। विहार में वाहनों के संबंध में, सड़क पर चलने में जागरूकता और सावधानी रखनी चाहिए।

भगवान महावीर के नाम से सम्बद्ध यूनिवर्सिटी में चतुर्मास

चतुर्मास में व्यवस्था समिति का एक विशाल नेटवर्क है। कार्यकर्ताओं में सामंजस्य होना भी विशेष बात होती है। हमें रहने के लिए भगवान महावीर विश्वविद्यालय में स्थान मिला। हमने कई चातुर्मास कर लिए पर किसी यूनिवर्सिटी, वह भी भगवान महावीर के नाम से सम्बद्ध, जहां शिक्षा क्रम भी चालू है, वहां स्थान उपलब्ध करवाना भी एक विशेष बात है। शय्यातर का लाभ लेना बड़ी बात है।

साध्वियों के भी कई सिंघाड़े यहाँ रहे हैं, वैरागी तैयार करने, तपस्या आदि में उनका भी अपने ढंग से योगदान रहा है। चतुर्मास में हमारे अनेक कार्यक्रम चले हैं। कक्षाएं, शिविर, कार्यशालाएं आदि के आयोजन भी हुए हैं।

जीवन विज्ञान दिवस

आज कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी - जीवन विज्ञान दिवस भी है। परम पूज्य गुरूदेव श्री तुलसी ने मुनिश्री नथमलजी स्वामी 'टमकोर' को आज के दिन 'महाप्रज्ञ' अलंकरण प्रदान किया था। उस दिन को जीवन वज्ञान दिवस के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है। जीवन विज्ञान भी हमारा लोक कल्याणकारी कार्यक्रम है जो विशेषकर शिक्षा जगत के लिए है। भावात्मक संतुलन, नैतिकता, संयम, अहिंसा, नशा मुक्ति के संस्कार भी विद्यार्थियों में पुष्ट रहें। जीवन विज्ञान का उपक्रम भी अच्छे ढंग से चलता रहे। पूज्यवर ने हाजरी वाचन कराते हुए प्रेरणाएं प्रदान करवाई।

उर्वरा भूमि है सूरत

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य प्रवर के इस समवसरण में अनेक प्रकार की रचनाएँ होती हैं। आचार्यवर के आभामंडल में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि विभिन्न क्षेत्रों के कार्यकर्त्ता, राजनेता, पत्रकार आदि लोगों ने पहुँच कर आपसे ऊर्जा प्राप्त की है। आचार्यवर के आशीर्वाद से महिलाओं और कन्याओं में भी अच्छा कार्य हुआ है। यह उर्वरा भूमि है, यहाँ वैरागी-वैरागन और अच्छे कार्यकर्त्ता तैयार हो सकते हैं। आचार्यवर के आभामंडल से निकलने वाली किरणों से हम सब शक्ति संपन्न बनते रहें।

मोती के समान वे क्षण

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि सूरत वासियों ने जितना गुरु सन्निधि के अवसर का लाभ उठाया, उनकी जिंदगी के वे क्षण मोती के समान बन गए। परम पूज्य गुरुदेव ने सूरत वासियों पर खूब कृपा बरसाई। ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना, चारित्राराधना और तपाराधना का बहुत अच्छा क्रम चला। सूरत का यह चातुर्मास अपने आप में ऐतिहासिक चातुर्मास रहा। गुरुदेव से जो पाया है, भीतर में जो अध्यात्म की लौ जगी है वह दिन प्रतिदिन प्रदीप्त होती रहे।

बहुमूल्य उपहार

साध्वीवर्याश्री संबुद्धयशाजी ने अपने अभिभाषण में कहा कि परम पूज्य आचार्य प्रवर का सूरत में चातुर्मास हुआ और गुरुदेव ने सभी को जीवन जीने की कला सिखाई है। यह कला जो व्यक्ति सीख लेता है वह कभी दुखी नहीं बनता है, उसकी आत्मा ऊर्ध्वारोहण करती है। सूरत वासियों ने गुरुदेव के बहुमूल्य उपहार का अच्छा लाभ उठाने का प्रयास किया है।

पुण्य के अक्षय कोष

बहुश्रुत परिषद् के सदस्य मुनिश्री उदितकुमारजी ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि मंत्री मुनिश्री बहुधा फरमाते थे कि राजा राज्य नहीं करता है, राजा के पुण्य काम करते हैं। परम पूज्य आचार्य प्रवर पुण्य पुरुष ही नहीं, पुण्य के अक्षय कोष हैं। आप जहां विराजते हैं, वह स्थान रमणीय हो जाता है। चातुर्मासिक प्रवेश की उपस्थिति, चार महीने तक भरा-भरा पंडाल, पर्युषण के समय की उपस्थिति, 6200 से अधिक पौषध आदि न जाने कितने-कितने कीर्तिमान आचार्यप्रवर के जीवन में घटित हुए हैं। चातुर्मास में उपस्थिति, उमंग, उपलब्धियों और व्यवस्थापन सब दृष्टियों से सूरत का चातुर्मास विशिष्ट रहा। सूरत वासियों में विशेष उमंग का भाव रहा। सैंकड़ों कार्यकर्ताओं के बल से यह चातुर्मास सफल बना है। मेरा सौभाग्य है कि आचार्य प्रवर के निर्देश से सूरत आया और सूरतवासियों ने अच्छी तैयारी कर 2024 का आचार्य प्रवर का चातुर्मास प्राप्त किया। सबके मिले-जुले प्रयास से यह चातुर्मास उपलब्धि पूर्ण रहा।

(शेष पेज 17 पर)

मंत्री मुनिश्री की कुछ अंशों में दूसरी देह

कितने विभाग और कितने कार्यकर्ताओं को व्यवस्था तंत्र से जुड़ने का अवसर मिला। मुनिश्री उदितकुमारजी का भी इन्हें मार्गदर्शन मिला। मुनिश्री के तीन चातुर्मास वृहत्तर सूरत में हो गए हैं। मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' भी आचार्यों के मर्यादा महोत्सव से पहले आदि श्रावकों को जोड़ने का उनका एक अच्छा क्रम था। मुनि श्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' का कुछ अंशों में रूप देखना हो तो मुनिश्री उदितकुमार जी स्वामी में देखा जा सकता है। उनकी कार्यशैली, गतिविधि आदि का कुछ दर्शन मुनिश्री उदित कुमार जी स्वामी में भी प्रतीत हो रहा है। श्रम और सूझबूझ, कार्यकर्ताओं को उत्साहित रखना, उन्हें धार्मिक-आध्यात्मिक मार्गदर्शन देना, श्रावक चर्या के सम्यक अनुपालन की प्रेरणा, चातुर्मास की सफलता, त्याग-प्रत्याख्यान, गोचरी आदि अनेक बातें हैं। गुरुदेव तुलसी के पड़िहारा मर्यादा महोत्सव से पूर्व मुनिश्री सुमेरमलजी का वहां प्रवास हुआ। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी बॉम्बे, जलगांव पधारे उनसे पहले भी मुनिश्री का प्रवास वहां हुआ। मुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी 'मंत्री मुनि' के सम्मान से सम्मानित थे, मुनिश्री तो नहीं रहे पर मंत्री मुनिश्री की कुछ अंशों में दूसरी देह मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी में देखने को मिल रही है। इस चतुर्मास में भी मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी का योगदान रहा है। लोगों के मुंह से बार बार मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी के मार्गदर्शन की बात सुनी भी थी और कुछ आँखों से देख भी रहे हैं। मुनिश्री बहुश्रुत परिषद् के संतों में दीक्षा पर्याय में सर्व ज्येष्ठ भी हैं। संयोजक तो मुख्य मुनि है परन्तु दीक्षा पर्याय में बड़े मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी हैं, आपका यथा योग्य अच्छा काम चलता रहे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
25 नवम्बर- 01 दिसम्बर, 2024

ज्ञान के साथ विद्यार्थियों में संयम की चेतना का भी हो विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती मान्य विश्व विद्यालय के 15वें दीक्षांत समारोह का हुआ आयोजन

सूरत।
11 नवम्बर, 2024

जैन विद्या के विशिष्ट प्राध्यापक आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में जैन विश्व भारती मान्य विश्व विद्यालय का 15वां दीक्षांत समारोह कार्यक्रम महावीर समवसरण सूरत में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। कुलपति बच्छराज दुगड़ ने संस्थान का परिचय दिया।

संस्थान के अनुशास्ता परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि ज्ञानार्जन से व्यक्ति एकाग्रचित्त होता है, जिससे चेतना की श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त होती है। ज्ञान से व्यक्ति अपनी आत्मा को धर्म और सदाचार में स्थित करता है और स्वयं धर्म में स्थित होकर दूसरों को भी धर्म में स्थापित कर सकता है।

पूज्य प्रवर ने आगे कहा कि जीवन की, समाज की और राष्ट्र की अनेक समस्यों के मूल में असंयम होता है। विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ संयम की चेतना भी आए। संयम अणुव्रत आंदोलन का प्राण तत्व है, इसे अपनाकर व्यक्ति भौतिक पदार्थों के प्रति आकर्षण से बच सकता है। संयम से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सुधार भी संभव है। अंक पाना विद्यार्थी का लक्ष्य हो सकता है। केवल अंक पाना नहीं, अपितु अच्छा परिश्रम कर अंक पाना लक्ष्य रहे। ज्ञान बढ़ाना पहला लक्ष्य हो, अंक पाना दूसरा।

आचार्यश्री ने विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने की शपथ दिलाई। पूज्य प्रवर ने शिक्षा मंत्री को शिक्षा के क्षेत्र में उन्मेष लाने, कुलाधिपति अर्जुन मेघवाल एवं कुलपति दुगड़ को विश्व विद्यालय के विकास में योगदान देने और पूर्व न्यायाधीश दिनेश महेश्वरी को धार्मिक-आध्यात्मिक उन्नयन करने की प्रेरणा दी।

मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने अपने संबोधन में कहा कि मैं आज मुख्य अतिथि नहीं, एक विद्यार्थी के नाते आपके बीच में उपस्थित हुआ हूँ। जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट न केवल शिक्षा प्रदान करता है, बल्कि जीवन मूल्यों का भी प्रशिक्षण देता है। यह Experiential Learning (अनुभव से शिक्षा) की बहुत बड़ी प्रयोगशाला है। आने वाले दिनों में, भारत सरकार की ओर से, जैन विश्व भारती विश्व विद्यालय प्राकृत भाषा का एक विशेष शोध केंद्र बने, ऐसा दायित्व पूर्ण करने का प्रयास किया जायेगा। शिक्षा मंत्री ने मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि यह विश्व विद्यालय 21वीं सदी का ज्ञान का केंद्र बने, मानवता के लिए भारतीय परम्पराओं पर आधारित जीवन दृष्टि यहाँ से प्राप्त हो, और अच्छे मनुष्य निर्माण की आपकी प्रयोगशाला सफल हो।

कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल ने वर्चुअल माध्यम से अपने सम्बोधन में संस्थान के विकास में अपने योगदान का संकल्प दोहराते हुए कहा कि 33 वर्षों की अपनी यात्रा में जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट ने शिक्षा और नैतिकता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया है। आपने कहा कि जैन विश्व भारती संस्थान विशिष्ट है क्योंकि यहाँ का पाठ्यक्रम भी विशिष्ट है, यह भारतीय विद्याओं एवं पुरातन ज्ञान का पोषक है। यह संस्थान भारतीय और प्राच्य विद्याओं के लिए समर्पित है। भारतीय पारम्परिक ज्ञान को केंद्र में रखकर इनके संरक्षण और संवर्धन का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को अपनी योग्यता का प्रदर्शन करते हुए अपनी लक्षित मंजिल को प्राप्त करने हेतु मंगल भावनाएं सम्प्रेषित की। (शेष पेज 17 पर)

सम्पादकीय

महाश्रमण के महाश्रम की एक और गाथा- उपलब्धियों से भरा सूरत चातुर्मास

भगवान महावीर की परंपरा में साधना कर रहे चारों तीर्थों के लिए चातुर्मास का समय आध्यात्मिक साधना का स्वर्णिम काल माना गया है। यह चार महीनों का कालखंड, धर्म और तपस्या के क्षेत्र में अनुशासन, संयम और साधना की विशेष ऊर्जा का प्रतीक होता है। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सन् 2024 का चातुर्मास सूरत की पुण्य भूमि पर पूर्ण किया। यह चातुर्मास न केवल धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट रहा, बल्कि उपलब्धियों से भरा था।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की चतुष्टयी में अभिस्नात करने वाले इस पावस ने हर क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त की। 'भगवती' जैसे विशाल आगम पर अपनी अमृत देशना पूर्ण कर पूज्य श्री ने 'आयारो' को अपनी देशना का विषय बनाया। गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित 'चंदन की चुटकी भली' जैसे आख्यानों के माध्यम से आचार्य प्रवर ने धर्म और जीवन मूल्यों की व्याख्या की।

रात्रि कालीन प्रवचन में मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी द्वारा रामायण के प्रसंगों की रोचक व्याख्या श्रोताओं को अभिभूत कर गई। भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के प्रांगण में पहली बार आयोजित चातुर्मास ने एक नया इतिहास रचा। सघन साधना शिविर, संस्कार निर्माण शिविर, प्रेक्षा ध्यान शिविर और विभिन्न संस्थाओं के अधिवेशनों ने समाज को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। प्रेक्षा कल्याण वर्ष का शुभारंभ भी सूरत की भूमि पर हुआ। इन कार्यक्रमों ने साधकों को न केवल आध्यात्मिक प्रेरणा दी, बल्कि जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने का मार्ग भी प्रशस्त किया।

प्रायः एक चातुर्मासिक प्रवास में दो दीक्षा महोत्सव देखने को मिलते हैं। इस बार संयम विहार का प्रांगण तीन-तीन दीक्षा महोत्सवों का साक्षी बना। सम्पूर्ण भारत वर्ष में जिन शासन के चारित्रात्माओं के चातुर्मासों में भी आचार्य श्री महाश्रमण जी के सूरत चातुर्मास को नंबर 1 का स्थान मिला।

इस चातुर्मास में तपस्या का अनुपम क्रम देखने को मिला। 1000 से अधिक अठाई, लगभग 108 वर्षीतप, अनेकों मासखमण, सैकड़ों आयंबिल तप और 6200 से अधिक पौषध—सभी तपस्याओं ने अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया। गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों द्वारा की गई लंबी तपस्याओं ने इस चातुर्मास को साधना का आदर्श स्वरूप दिया। विशेष रूप से, संयम विहार परिसर ने तीन-तीन दीक्षा महोत्सवों का साक्षी बनकर संयम और त्याग की महत्ता को रेखांकित किया।

दीपावली के अवसर पर मुख्य प्रवचन कार्यक्रम आदि में मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी कुर्सी की बक्शीश प्रदान कराने का सीन भी नयनाभिराम था। चारों ही महीने जनता का आवागमन और उपस्थिति देखने योग्य थी। चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति ने अपने प्रबंधन कौशल से अद्वितीय मिसाल पेश की।

लेखनी तो सीमित ही लिख पाएगी, परंतु उपरोक्त के अतिरिक्त भी अनेकानेक कार्यक्रम ऐसे हुए जिनसे जिनशासन और तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना बढ़ी है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, सबने यथोचित अपना योगदान भी दिया। परंतु यह सब हो सका एकमात्र परम पूज्य आचार्य प्रवर के आशीर्वाद से, उनकी ऊर्जा से। कुछ दिनों पूर्व ही संभवतः मुनि श्री उदित कुमार जी ने कहा था कि आचार्यश्री पुण्य के अक्षय कोष हैं और यह सब इसी पुण्य पुरुष के पुण्य का प्रभाव है। हालांकि इन सब गतिविधियों ने धर्म संघ की शोभा को वृद्धिंगत ही किया है, फिर भी इनमें पूज्य आचार्य प्रवर का अहर्निष श्रम भी लगा है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के वे शब्द – 'महाश्रमण युवा मनस्वी ही महातपस्वी भी है', गुरुदेव को देखते ही स्मृति पटल पर आ जाते हैं।

हम सभी को महातपस्वी का वरद हस्त युगों युगों तक प्राप्त रहे, और आपश्री की छत्र छाया में हम भी संघ सेवा में यथाशक्ति योगदान देते रहें, यही मंगलकामना।

– संपादक

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।